कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः६ अंकः३ दिसम्बर २००९, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः रु0 १०/–
वार्षिकः रु0 ११०/–
पॉच वर्ष–रु0 ५००/–
आजीवन सदस्यः रु0 ११००/–
संरक्षक सदस्य : रु0 ५०००/–

अंदर पढ़िए

राज ठाकरे पर देश द्रोह का मुकदमा क्यों नहीं ०४

बिजली का संकट सरकारी है ०८

सेवा आचरण या धन का चरित्र? १०

स्थायी स्तम्भः

अपनी बात	०४
प्रेरक प्रसंग	०७
हास्य व्यंग्यः कुछ आप ही सुझाये	१३
अहिन्दी भाषी रचनाकारः कैदी हो जाती है बुजुर्ग मांः	१५
अध्यात्मः गुरू नानक देव जी	१६
भागवत कथा की प्रासंगकिता	२३
कहॉनीः रिश्तो का रिश्ता	२१
कविताएं–	१५,२६,२७
साहित्य समाचार–	१४,१६,२०,२८
मासिक राशिफलःसंजय चतुर्वेदी	२४
स्नेहबाल मंच–	२५
स्नेह युवा मंचःलघुकथाएं	२६
खेल की दुनिया	२६
आपने कुछ कहा	३०
लघु कथाएं–	३१
पुस्तक समीक्षा–	३२

अपनी बात

राज ठाकरे पर देश द्रोह का मुकदमा क्यों नहीं

बार-बार कभी क्षेत्रवाद के नाम पर, कभी राज्यवाद, कभी भाषावाद के नाम पर जहर उगलने वाले मनसे प्रमुख राजठाकरे, आज भी खुलेआम घूम रहे हैं. एक आम आदमी को छोटी-छोटी गल्ती करने पर गिरफ्तार कर लेना. लेकिन इस मामले पर हमारी राज्य सरकार व केन्द्र सरकार क्यों चुप है. जबकि भाजपा नेता वरुण गांधी को कुछ माह पहले सम्पन्न लोकसभा चुनाव के दौरान भड़काऊ भाषण देने पर, त्वरित कार्यवाही करते हुए दूसरे दिन ही गिरफ्तार कर लिया गया था. क्या अपने देश में दो संविधान हैं. कुछ खास लोगों के लिए अलग, और आम लोगों के लिए अलग. या केन्द्र व राज्य सरकारों को अपने हित के लिए (वोट राजनीति) के हिसाब संविधान की धाराओं की परिभाषा बदलती रहती है.

अभी कुछ महीनों पहले जब केन्द्र में कांग्रेस के नेतृत्व में सयुक्त प्रगतिशील गंठबधन की सरकार का शपथ ग्रहण समारोह हुआ था तो कई अहिन्दी भाषी राज्यों के सांसदों/मंत्रियों ने हिन्दी में शपथ लिया था. उनमें युवा सांसद व पूर्व लोकसभा अध्यक्ष पी.ए.संगमा की पूत्री अगाथा संगमा भी थी. कितना अच्छा लगा था कि राजभाषा हिंदी के प्रति अहिन्दी भाषियों में भी लगन हैं, प्यार है. लेकिन दूसरी तरफ महाराष्ट्र जहॉ की अधिकांश जनता भॅली-भॉति हिन्दी जानती है, आम बोलचाल में भी हिन्दी भाषा के प्रयोग सामान्यतः मराठी की तुलना में अधिक ही होता हैं. वहॉ मनसे प्रमुख राजठाकरे नवगठित विधानसभा के शपथ लेने के पूर्व ही यह ऐलान कर दिया था-'अगर कोई विधायक मराठी में शपथ नहीं लेता तो सदन देखेगा कि क्या होता है.' इनकी चुनौती को स्वीकार करते हुए भाजपा के दो विधायक-गिरीश बापट व गिरीश महाजन ने संस्कृत में, कांग्रेस के दो विधायक-अमीन पटेल व राम सिंह ठाकुर ने हिन्दी में शपथ ली. लेकिन जब समाजवादी पार्टी के विधायक अबू आजमी हिन्दी में शपथ लेना प्रारम्भ किए तो मनसे के चार विधायक -शिशिर शिंदे, रमेश वांजले, राम कदम और वसंत गीते ने माईक छीन लिया और एक विधायक ने आजमी को थप्पड़ भी मारा. इस देश द्रोही कुकृत्य पर उन चारों विधायकों को चार साल के लिए विधानसभा से निलंबित कर दिया गया. आखिर इतना छोटा दंड देकर हम क्या यह संदेश देना चाहते हैं कि हमारे देश का नेता चाहे कुछ भी करें, उसके लिए कोई संविधान, कानून नहीं है. हिन्दी के दुश्मनों को ललकारते हुए वीरता से हिंदी में शपथ लेने वाले सभी विधायक बधाई के पात्र है. खासकर अबू आजमी जिन्हें इसके लिए थप्पड़ भी खानी पड़ी. मनसे प्रमुख राज ठाकरे को यह समझ लेना चाहिए कि उनका यह भाषावाद, क्षेत्रवाद का जुमला ज्यादे दिनों तक नहीं चलने वाला है. अभी १५ नवम्बर ०९ को आयोजित भारतीय स्टेट बैंक की परीक्षा में राजठाकरे ने एसबीआई परीक्षा नियंत्रक को यह कहा कि महाराष्ट्र में मराठी मानुष को ही नौकरी दी जाए. लेकिन इसके बावजूद राजठाकरे के खिलाफ कोई कानूनी कार्यवाही नहीं हुई. मनसे प्रमुख के इन कृकुत्यों पर न तो महाराष्ट्र राज्य सरकार ने कोई कड़ा कदम उठाया और न ही केन्द्र की सप्रंग सरकार. दोनों सरकारों ने मौन साधे रक्खा. सबसे बड़ा आश्चर्य तो तब हुआ जब हिन्दी भाषा के विकास के नाम पर लाखो/करोड़ो रुपये का सालाना बजट लेने वाली हिन्दी की सेवी संस्थाओं तक ने इसका विरोध नहीं किया और न हीं कहीं किसी संस्था द्वारा जनहित/राष्ट्रहित में कोई मुकदमा दर्ज कराया गया. हिन्दी के साहित्यकार तो अक्सर ऐसी घटनाओं पर शर्मनाक मौन साध लिया करते हैं. उन्हें हिन्दी साहित्य से प्रेम तो है लेकिन हिन्दी भाषा से नहीं. ऐसे कुकृत्य करने वालें मनसे प्रमुख राज ठाकरे, व उनके चारों विधायकों पर देश द्रोह का मुकदमा दर्ज कर जेल में ठुस देना चाहिए. ताकि भविष्य में कोई राजनेता राजभाषा हिन्दी के नाम पर राजनीति करने/ अपमान करने के पहले दस बार सोचे. सभी हिन्दी के साहित्यकारों/ हिन्दी के उत्थान के गठित हिन्दी संस्थाओं को ऐसे कुकृत्यों का विरोध करने के लिए खुलकर आगे आना चाहिए. अन्यथा अपनी संस्थाओं को बंद कर केन्द्र व राज्य सरकारों की गुलामी करनी चाहिए.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सत्य प्रकाश मालवीय
पूर्व केन्द्रीय मंत्री

डी-५०३, आनन्द लोक पूर्वाशा,
मयूर विहार, फेस-१, दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि 'विश्व स्नेह समाज पत्रिका' इलाहाबाद द्वारा सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ० विनय कुमार मालवीय के जीवन एवं साहित्य पर आधारित पर एक विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है.

मैंने डॉ० मालवीय की बाल रचनाओं को देखा एवं पढ़ा है. सहज, सरस, एवं बोधगम्य शैली में लिखी होने के कारण इनकी रचनाएँ बच्चों के लिये शिक्षाप्रद, मनोरंजक एवं प्रेरक है. शासकीय सेवा के साथ-साथ साहित्य सृजन में डॉ० विनय की सक्रियता निश्चय ही अनुकरणीय एवं प्रशसनीय है.

डॉ० विनय कुमार मालवीय अपने भावी जीवन में यश अर्जित करें और साहित्य सृजन के पथपर निरन्तर अग्रसर रहें, ऐसी मेरी हार्दिक मंगल कामनाएं हैं.

शुभकामनाओं सहित

सत्य प्रकाश मालवीय

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
सम्पादक, विश्व स्नेह समाज
इलाहाबाद

पत्रिका के १वर्ष पूर्ण करने पर सभी पाठ्कों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रो०महेन्द्र कुमार अग्रवाल
आजीवन सदस्य, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

अग्रवाल मेडिकल स्टोर

१० रीवा बिल्डिग लीडर रोड, रेलवे स्टेशन के सामने, इलाहाबाद, उ०प्र० मो०: ९९३५६५६४१२

पत्रिका के १ वर्ष पूर्ण होने पर सभी पाठकों को हार्दिक बधाई

बिल्डिंग कास्ट्रक्शन, सड़क निर्माण, पूल आदि के लिए सम्पर्क करें

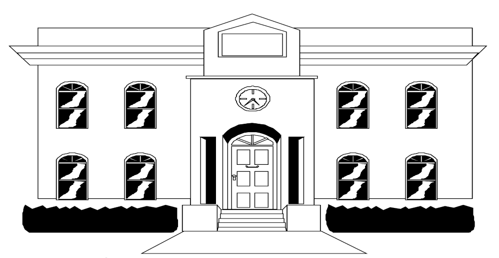

मेसर्स संगम इण्टरप्राइजेज

२७७/१/३५५, कन्धईपुर, इलाहाबाद
मो० :९६१६०८३१८७

सदस्यता फार्म

महोदय,

मैं *विश्व स्नेह समाज* राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका का वार्षिक/पंचवर्षीय/आजीवन(ग्यारह वर्ष)/सरंक्षक सदस्यता शुल्क....................नगद/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/पे-स्लीप, दिनांक................के अन्तर्गत अदा कर रहा हुं. अतः मुझे **विश्व स्नेह समाज** निम्न पते पर भेजें

नामः ....पिता/पति का नाम...........................

पूरा पताः ....

डाकखानाः.........................जनपदः ....राज्य........................

पिनकोडः.......................दू०/मो० सं.ः......................ईमेलः..........................

विशेषः

१.सदस्यता शुल्क	वार्षिक ११०/-रुपये,	पंचवर्षीय-५००/-रुपये,
	आजीवन-१०००/-रुपये	संरक्षक-२५००/-
विदेशों में	वार्षिक ६००/-रुपये,	पंचवर्षीय-२७००/-रुपये,
	आजीवन-५५००/-रुपये	सरंक्षकः११०००/-

२. ड्राफ्ट *'विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद'* में देय होना चाहिए. कृपया ड्राफ्ट के पीछे अपना पूरा नाम व स्पष्ट पूर्ण पता अवश्य लिखें.

३. विदेशों में सदस्यता कम से कम १ वर्ष (१२ महीने) के लिए ही दी जाएगी.

सदस्य के हस्ताक्षर

विशेष छूट

सदस्यता ग्रहण करें और लाभ पायें:

•अहिन्दी भाषियों को सदस्यता शुल्क में १०प्रतिशत, विज्ञापन दर में २५ प्रतिशत की छूट •वर्ष में तीन से चार विशेषांक बिना अतिरिक्त भुगतान के •वर्ष २००५ या उससे पूर्व के वे सदस्य जिनकी सदस्यता बरकरार है उनके जीवन परिचय का निःशुल्क प्रकाशन • विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के सदस्यों को सदस्यता में १५प्रतिशत व विज्ञापन में ४० प्रतिशत की छूट • आजीवन सदस्य का जीवन परिचय एक बार निःशुल्क • सरंक्षक सदस्यों को आजीवन सदस्यता के साथ ही पॉच वर्ष तक पत्रिका में नाम, मोबाइल नं. ईमल के साथ प्रकाशित किया जाएगा •ढेरों जानकारियां, ईनामी कूपन मुफ्त •अनाथ/विकलांगों को सदस्यता में २०प्रतिशत व विज्ञापन में ४०प्रतिशत की छूट

विश्वस्नेहसमाज
(एक क्रांति)

संपर्कः एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
email: vsnehsamaj@rediffmail.com
Mo.:09335155949

प्रेरक प्रसंग

हर घड़ी मृत्यु को याद रक्खो

एक व्यक्ति नित्य संत फरीद के पास जाकर पूछता-'मेरी बुरी आदतें, मेरा दुष्ट स्वभाव कैसे छूटेगा.' फरीद उसे रोज टाल देते. एक दिन जब उसने बहुत जिद की तो वह गंभीर हो गए और उसकी मस्तक की रेखाएँ देखते हुए बोले-'देखो, अब तुम्हारा अंत निकट है. तुम्हारी जिंदगी अब चालीस दिनों से ज्यादा नही हैं.' सुनने वाला वह व्यक्ति चिंता में डूब गया और उसने चालीस दिनों का एक तप-अनुष्ठान करने का निश्चय किया. इस तरह वह पूरे चालीस दिन दु:ख, भय, पश्चाताप व भजन में लगा रहा. चालीस दिनों में जब केवल एक दिन बचा तो संत फरीद ने उसे अपने पास बुलाया और पूछा-'इन चालीस दिनों में कितनी बार तुमने दुष्टता की, कितने पाप किए?' उसने उत्तर दिया-'एक बार भी मेरे मन में कोई गलत ख्याल नहीं आया. चित्त पर हर क्षण मृत्यु का भय छाया रहा, ऐसे में दुष्ट आदतें कहॉ हावी हो पाती.' उसकी बातों पर संत जोर से हॅसे और बोले-'बुराइयों से बचने का एक ही उपाय है, हर घड़ी मृत्यु को याद रखो और वह करने की सोचो, जिससे भविष्य उज्जवल बनें.' मृत्यु टल जाने के अभयदान को पाकर, वह व्यक्ति चला गया. अब उसके स्वभाव में दुष्टता एवं बुराइयां नहीं रह गई थी. मृत्यु के स्मरण ने उसे निष्पाप कर दिया.

केवल एक शब्द में उपदेश दे दें.

महान दार्शनिक संत अगस्तीन के पास एक जिज्ञासु पहुंचा. उसे अपने जीवन के सत्य को समझने की सचमुच ही जिज्ञासा थी. उसने अगस्तीन से पूछा कि आप मुझे बहुत कुछ कहने-समझाने की बजाय, केवल एक शब्द में उपदेश दे दें.

संत अगस्तीन ने उसकी ओर देखा. बात उसकी न केवल विचित्र थी, बल्कि चुनौतीपूर्ण भी थी. अभी तक वह व्यक्ति उनसे कहे जा रहा था कि आप मुझे बहुत आज्ञाए न देना, क्योंकि मैं भूल जाउंगा. आप तो मुझे एक शब्द में ही सार की बात बता दें. मैंनें शास्त्रों को भी नही पढ़ा है और न ही पढ़ने की इच्छा है.

जितना यह जिज्ञासु अनूठा था, उतने ही अनूठे थे-संत अगस्तीन. वह मुस्कराते हुए बोले-'तुम्हारे लिए वह एक शब्द 'प्रेम' है, पर यह तथ्य ध्यान रखना प्रेम वही कर सकते है, जिन्होंने स्वार्थ वासना एवं अहंता की क्षुद्रता का पूरी तरह से त्याग कर दिया है. यदि तुम सचमुच ही प्रेम कर सको, शेष सब अपने आप ही हो जाएगा.

++++++++++++++++++++++++++++++

१. अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते

वह अनादि ब्रह्म न सत् ही कहा जाता है, न असत् ही।

गीता, अध्याय-१३, श्लोक-१३

२. सत्त्वात्संजायते ज्ञानं।

सत्वगुण से ज्ञान उत्पन्न होता है।

गीता, अध्याय-१४, श्लोक-१७

दाऊजी, समाज सुधारक

अदाब अर्ज है

बन्दा तो बन्दा रहे मालिक शांहशाह।
बन्दा मालिक से मिले मिट जाए हर चाह।।

दयावान तो ईश है उससे करना प्रेम।
इसी ज्ञान से जीव भी पाता जग में क्षेम।।

दुखियों की कुटिया जहॉ वहीं बसे भगवान।
जो खोजे प्रासाद में वही रहे अज्ञान।।

दिवस, निशाकर के बिना सधे न कोई काम।
जो इससे सहयोग लें वही कमाता नाम।।

जन्म-मरण इक खेल है खेल मनुज दिन रात।
इसी खेल के स्वाद में मस्त बना मधु गात।।

प्रलय काल के ख़ौफ से प्राणी कंपित होय।
पुण्यों के प्रताप से पाप सदा खुद रोय।।

सेवा से मेवा मिले मानव सब कुछ पाय।
इस धन से संतुष्ट हो प्राणी खुद इतराय।

करे समर्पण जो सदा वही धर्म को पाय।
बिना धर्म बेकार है मनुज सदा पछ्ताय।।

मानव योनि महान है अन्य जीव कुछ हीन।
जो जाने यह भेद है वह तो महाकुलीन।।

मूर्तिकार परमात्मा प्राणी बर्तन खोंट।
सत्य कहें अब 'अश्क' भी तृष्णा को कर भेंट।।

प्रो0 हारून रशीद 'अश्क', पटना, बिहार

बिजली का संकट सरकारी है

जिस देश में जनता को बिजली न मिल रही हो, घरों में अंधेरा हो और गॉवो में दस-दस दिन तक बिजली का प्रवाह परिलक्षित न होता हो, वहॉ मंत्रियों को और उनके नौकरशाहों को वातानुकूलित यंत्रों का उपभोग करना एक प्रकार से बिजली से त्रस्त जनता के साथ देश के मंत्रियों, जनप्रतिनिधियों और नौकरशाहों का बलात्कार है.

✍ **हितेश कुमार शर्मा,**
बिजनौर, उ.प्र.

वर्तमान में जो बिजली का संकट है, जिससे गरीब जनता त्रस्त है और पूरे देशवासियों का जीवन अस्त व्यस्त है, उसके लिए हमारी सरकार की जिम्मेदारी है, पूर्ण रूप से जिम्मेदार है वह नेता और वह अधिकारी जो वातानुकूलित कमरों में सोते हैं, कमरों में कार्य करते है और वातानुकूलित कारों से चलते हैं. आजादी के ६२ वर्ष हो गये. बिजली की समस्या की ओर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया. शायद १४-१५ वर्षो में तो कोई नया पावर प्लांट भी नहीं लगा. बिजली का उत्पादन उतना नही हैं, जितना राजनीतिक आश्वासनों के आधीन जनता को दिया गया है. उत्पादन कम और उपभोक्ता अधिक, संकट तो होना ही है. यदि हमने इन बासठ वर्षो में उत्पादन और उपभोग का संतुलन बनाने का प्रयास किया होता तो बिजली का संकट हो ही नहीं सकता था. आज स्थिति यह है कि गांव-गांव में बिजली के तार खींच दिये गये है, खम्बे खड़े कर दिये गये हैं, किन्तु इनमें बिजली कभी कभार ही आती है. ऐसा इसलिए है क्योंकि उत्पादन कम है.

महानगर की सड़को पर जिस प्रकार बिजली का दुरूपयोग होता है, उतना ऐसे देश में जहॉ बिजली का संकट बरकरार हो, जहॉ गॉव में खम्भे तो हो और तार भी खींचे हो, किन्तु विद्युत प्रवाह न हो, वहॉ नहीं होना चाहिए. बड़े-बड़े मरकरी बल्व लगाकर सड़को को जगमगा दिया गया है, भले ही घरों में अंधेरा रहे. यदि सड़को पर सौर ऊर्जा के माध्यम से प्रकाश व्यवस्था की जाती तो बिजली का उपभोग इधर से हटाकर गांव के लोगों के लिए सुरक्षित किया जा सकता था. सौर उर्जा के माध यम से लगाये रोशनी के उपकरण धूप के माध्यम से कार्य करते है और रात्रि में किसी प्रकार से इनमें कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती, अन्दाजा लगाइये यह सरकार कितनी बिजली बचा सकती थी और सौर उर्जा का कितना अच्छा प्रयोग हो सकता है, यदि केवल सड़को पर ही प्रकाश की व्यवस्था सौर उर्जा के माध्यम से की जाती. लेकिन हम जनता को तो सौर ऊर्जा प्रयोग करने के लिए प्रलोभन देते रहे. लेकिन सरकारी तौर पर इसका प्रयोग करने की कभी नहीं सोची. हमारी सोच के कारण ही बिजली का संकट कुछ लोगों के लिए मृत्यु जैसा भयानक हो गया है.

स्वतन्त्रता के बाद प्रत्येक अधिकारी प्रत्येक नेता, प्रत्येक मंत्री देश का बादशाह बन गया. जिन जागीरदारों को और राजाओं को समाप्त करके और उनके राज्यों को भारत वर्ष में विलय करके एकता का उद्घोष किया गया था, वह राजा और जागीरदार तो समाप्त हो गये, लेकिन मंत्रियो और अधिकारियों के रूप में नये बादशाह उत्पन्न हो गये. जो बिजली के घोर संकट में भी वातानुकूलित कक्ष में रहते हैं. प्रधानमंत्री से लेकर जिलाधि कारी तक प्रत्येक स्तर पर वातानुकूलित यंत्र लगे हुए है. दिन में भी बड़े-बड़े बल्बों की रोशनी में इस अंधे युग में सरकारी कामकाज होता है. बहुत से तो सरकारी दफ्तरों में बन्द होने के बाद भी सारी-सारी रात लाईटें चलती रहती हैं. हम कितने कर्मठ हैं, कितने राष्ट्रभक्त है कि दिन में भी सड़को की लाईट बन्द करना भूल जाते है. सम्भवतः देश के कर्णधारों को दिन की रोशनी में भी बिजली की रोशनी आवश्यक प्रतीत होती हैं.

जिस देश में जनता को बिजली न मिल रही हो, घरों में अंधेरा हो और गॉवो में दस-दस दिन तक बिजली का प्रवाह परिलक्षित न होता हो, वहॉ मंत्रियों को और उनके नौकरशाहों को वातानुकूलित यंत्रों का उपभोग करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है. यह एक प्रकार से बिजली से त्रस्त जनता के साथ देश के मंत्रियों, जनप्रतिनिधियों और नौकरशाहों का बलात्कार है. जिस देश में रात-रात भर बिजली न आने से घरों में पंखा भी न चल पाता हो, वहॉ यह जनता के पैसे से वातानुकूलित यंत्र खरीदकर उसकी ठण्डक में कैसे सो लेते है, यह भी आश्चर्य की बात है. आश्चर्य यह भी है कि ऐसा कानून क्यों नहीं बनाया गया कि जब तक बिजली का उत्पादन वांछित आवश्यकतानुसार नहीं होता है, तब तक कोई भी सरकारी संस्थान अथवा औद्योगिक संस्थान वातानुकूलित यंत्रो का प्रयोग अपने सोने और कार्य करने के यंत्रो में नहीं करेगा, लेकिन हमारे चरित्र पर और हमारे नैतिक

मूल्यों पर स्वार्थ इतना हावी हो गया है कि हमारे पड़ोस में किसी गरीब के मकान में भले ही रातभर बिजली न होने से बच्चे न सो पाये, लेकिन हमारे महल में वातानुकूलित यंत्र होना ही चाहिए और हमारे महल का बिजली का कनेक्शन २४ घंटे की सप्लाई व्यवस्था होना चाहिए. हमारी नज़र में जीवन और मृत्यु का अंतर भी शून्य हो गया है. लेकिन भला हो सुविधा शुल्क का प्रत्येक व्यक्ति को उसकी इच्छानुसार प्राप्ति हो जाती है.

हमारे देश में कितनी अच्छी व्यवस्था है कि बिजली का इच्छानुसार प्रयोग करने को स्वतंत्र है, यानि जिस जनता के कारण वह वेतन पाते है, उस जनता से अधिक सुविधाएँ उन्हें प्राप्त है. जाड़ो में और गर्मियों में हीटर पर खाना बनाना, उस जनता से अधिक सुविधाएँ उन्हें प्राप्त है. जाड़ो में और गर्मियों में हीटर पर खाना बनाना, हीटर पर पानी गर्म करना और बड़े-बड़े बल्बों की रोशनी में काम करना, जाड़ो में भी अपने कमरे में गर्मी का अनुभव करना और वह भी बिल्कुल मुफ्त, बिजली कर्मचारियों को ही उपलब्ध है. जहाँ साधारण जनता के घर में पंखा भी नहीं चल पाता हो, वहाँ अतिआवश्यक लाईन से बिजली कनेक्शन जोड़कर बिजली कर्मचारी २४ घंटे बिजली का आराम प्राप्त करते है. यदि बिजली कर्मचारियों को बिजली की सुविधा देनी ही है तो कम से कम यूनिट निश्चित किये जाने चाहिए थे. और यह आदेश होना चाहिए था कि एक व्यक्ति/एक परिवार/एक अधिकारी/कर्मचारी/मंत्रीजी/जन प्रतिनिधि एक निश्चित यूनिट बिजली का ही मुफ्त प्रयोग कर सकेंगें. मुफ्त खोरों पर भी प्रतिबन्ध आवश्यक होता है. इसके अतिरिक्त बिजली की चोरी एक आम बात है, बहुत से ऐसे मौहल्ले है, जहाँ रात को बिजली के तारों में कटवे डालकर बिजली की चोरी की जाती है और हम जानते हुए भी उनको पकड़ने का दुस्साहस नहीं कर पाते. क्योंकि सरकार की ओर से उनको सुरक्षा प्राप्त हैं और सम्भवतः यह निर्देश है कि उन मोहल्लों में न जाया जाये. इसीलिए बिजली कर्मचारी वहाँ नहीं जाते और यदि कभी भूले जाकर कोई कार्यवाही करते भी है तो या तो पिटते है अथवा सरकारी नाराजगी भुगतते है.

राज मार्गो, बड़े-बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों,रेलवे स्टेशनों, बस अड्डो, और एयरोड्रम पर वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में सौर ऊर्जा के माध्यम से प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए.

जब तक बिजली का उत्पादन इतना नहीं हो जाता कि जहाँ-जहाँ बिजली के खम्भे और तार पहुँचे हुए है, वहाँ तक बिजली पहुँच सके और सामान्य रूप से २४ घंटे बिजली उपलब्ध रहे तब तक मंत्रियों, जनप्रतिनिधियों और सरकारी कार्यालयों में वातानुकूलित यंत्रों का प्रयोग प्रतिबन्धित होना चाहिए और राज मार्गो पर सौर ऊर्जा के माध्यम से प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए. बड़े-बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों में जहाँ रात्रि में भी काम होता है, वहाँ भी सौर ऊर्जा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए. रेलवे स्टेशनों, बस अड्डो, और एयरोड्रम पर वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में सौर ऊर्जा के माध्यम से प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए. सड़को पर तो बिजली की व्यवस्था केवल एक विकल्प के रूप में १० सौर ऊर्जा के खम्बों के बाद एक बिजली के खम्बे के रूप में होनी चाहिए. नये-नये पावर प्लांट बनाने की योजना पर अमल किया जाना चाहिए और नये-नये विद्युत उत्पादन केन्द्र स्थापित किये जाने चाहिए.

देखने में आया है कि जहाँ पर सात इकाईयाँ बिजली उत्पादन की है, वहाँ पर केवल दो ही कार्य करती है. शेष पाँच में से दो निष्क्रिय रहती है, दो मरम्मत में रहती है और एक विकल्प के रूप में रक्खी जाती है. जहाँ सात गुनी बिजली बननी चाहिए, वहाँ केवल दोगुनी बिजली ही बनती है. जानकारी पर यह भी स्पष्ट हो सकता है कि बिजली की कृत्रिम कमी क्यों रखी जाती है. शायद कृत्रिम कमी रखने से ही बिजली विभाग से सम्बन्धित मंत्रियों और अधिकारियों का महत्व बढ़ता है. एक शहर के लोग और उसमें चलने वाले औद्योगिक केन्द्र के मालिकान जब जाकर सम्बन्धित मंत्रियों और अधिकारियों को प्रसन्न करते है तब वहाँ विद्युत प्रवाह प्राप्त होता है. यदि बिजली पूरी तरह से उपलब्ध हो तो प्रसन्न करने और प्रसन्न होने का प्रश्न ही समाप्त हो जाये. बिजली की बिक्री करना सम्बन्धित मंत्री जी और अधिकारियों के हाथ में है और यह बिक्री विशेष परिस्थितियों में विशेष प्रतिष्ठानों, शहरो, व्यक्तियों की होती है. जिस शहर से मंत्री जी अथवा अधिकारीगण प्रसन्न नहीं होते, वहाँ २४ में से २० घंटे का पावर कट होताा है. और जहाँ सम्बन्धित व्यक्ति प्रसन्न हो जाते है वहाँ तो पावर कट होता ही नहीं अथवा २४ में से ४ घंटे का होता है. बिजली का उत्पादन और आपूर्ति उन लोगों की दया पर निर्भर है जो स्वयं बिजली की उपलब्धता का पूर्ण लाभ उठाते हुए वातानुकूलित यंत्रो के साये में पूरी रात गर्मियों में भी कम्बल ओढ़कर सोते है. ईश्वर कब इन पर कम्बल डालेगा, इसकी प्रतिक्षा है अन्यथा बिजली की स्थिति ऐसी ही रहेगी जैसी आजकल है.

सेवा आचरण या धन का चरित्र?

१९३६ के चुनावों के बाद कांग्रेस ने प्रदेश सरकारे गठित की, जो देर रात तक सचिवालयों में बैठ कर काम किया करते थी. मंत्रीगण वेतन भी नाम मात्र का पांच सौ रुपया लेते थे और गांधी जी के निर्देशानुसार सरकारी बंगलों में दो मंत्री एक साथ आधा-आधा हिस्सा बांट कर रहा करते थे. अधिकांश नेता साधारण मध्यम् स्थिति के ही थे. बाद में वही जवाहर लाल जब खुद प्रधानमंत्री बने तो उनका ठाट राजाओं वाला ही था.

✍समाज प्रवाह, मुंबई

जवाहरलाल नेहरू तब कांग्रेस के अध्यक्ष व महामंत्री रह चुके थे. अपनी किताब डिस्कवरी ऑफ इंडिया में १९३६ के आमचुनावों का जिक्र कुछ इस तरह लिखा है-'देश भर में कांग्रेस के लाखो सदस्य थे, सदस्यता शुल्क सिर्फ चार आना था-और उन्हीं के शुल्क से कांग्रेस ने तमाम देश के चुनाव लड़े थे शिवाय प्रचार का कोई अतिरिक्त खर्च ही नहीं था. उम्मीदवार पार्टी और व्यक्ति का नाम ही काफी होता था. व्यक्ति सेवा और आचरण से लोग स्वयं वोट दिया करते थे. उतने कम खर्च में भी कांग्रेस ने लगभग प्रान्तों में केवल पजाब, बंगाल और सिन्ध छोड़कर गजब की बहुमत हासिल की थी. तब कांग्रेस ने किसी धनवान के धन या बूते से चुनाव नहीं लड़ा था यही उनके लिखने का आशय था, जबकि सामने मुस्लिमलीग में केवल जागिरदार और धनवानों का बोलबाला था. तीसरी तरफ अंग्रेजों के पिट्ठू राजा और चंद धनवान थे पर उन्होंने भी बहुत अधिक खर्च नहीं किया था. कारण उस जमाने में राजनीति लालच कमाई का माध्यम नहीं थी. बावजूद इसके कांग्रेस के गरीब देश सेवकों ने भारी बहुमत से विजय हासिल की थी. तब महत्व था सेवा और आचरण. उन्हीं दिनों चुनावों के बाद कांग्रेस ने प्रदेश सरकारे गठित की जो देर रात तक सचिवालयों में बैठ कर काम किया करते थी. मंत्रीगण वेतन भी मात्र पांच सौ रुपया लेते थे और एक सरकारी बंगलें में दो मंत्री आधे-आधे हिस्से रहा करते थे, दलील की गरीब के घर कहां बड़े होते है किंतु जब जवाहर लाल जब खुद प्रधानमंत्री बने तो उनका ठाट राजाओं वाला ही था. उन्हीं का अनुकरण तब से शुरू हुआ जिसका नतीजा सामने है आजादी के बाद हर कोई कांग्रेस का चवन्नी छाप मेम्बर तो बन सकता था परन्तु तत्काल कोई पद नहीं मिलता था. शुरू में तब साधारण सदस्य (चार आना) को कई जिम्मेदारी वाले सेवा के काम दिये जाते थे. जिनमें शराब बंदी, मजदूर संगठन, खादी प्रचार, ग्रामोद्योग, प्रौढ़शिक्षा, हिन्दी प्रचार, झोपड़पट्टी सुधार, महिलापयोगी सेवा जैसे करीब बीस कार्यक्रम होते थे जिन्हें करने वालों को ही खादी पहनने तथा सक्रिय कार्यकर्ता बनने की पात्रता मिलती थी. इन कार्यो में सक्रियता देखकर ही उसे लोकल कमेटी की सदस्यता, उसके कुछ समय बाद उसे पदाधिकारी बनने का मौका, उक्त पदाधिकारी के पद की सक्रियता देखने के बाद उसे स्थानीय नगरपालिका या ग्रामपंचायतो की सदस्यता के लिए,-तब तक उसकी पार्टी के लिए १० से १५ वर्ष तक ही सेवा सक्रियता हो जाती थी. नगरपालिका की एक या दो टर्म की सक्रियता के बाद उसे विधानसभा, वहां दो टर्म की सक्रियता के बाद मंत्री पद या सांसद बनने का अवसर दिया जाता था. तब तक उसकी जिन्दगी करीब ५० वर्ष तक पहुंच जाती थी. इसके कई लाभ होते थे-जमीन से जुड़े होने के कारण तथा जनता के बीच विविध क्षेत्रों में सेवा कार्य किये होने के कारण जनसेवा का लक्ष्य जनता की व क्षेत्र की समस्याओं का गरीबों की तकलीफों का उसे अच्छा ख्याल रहता था उसी मुताबिक वह वहां काम की रजुवात किया करता था. उसके कार्यो में अनुभव की प्रौढ़ता रहती और सदन में बहस एवं कार्यवाही आदि में भी पूरा योगदान किया करता था. गाली गलौज व हुल्लड़ हुड़दंग का प्रयास कभी कभार अपवाद स्वरूप ही सुनाई पड़ता था. पार्टी के उद्देश्यों व कार्यक्रमों का उसे पता रहता था इसलिये नीतिगत मामले में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती थी. ऐसे लोगों में भ्रष्टाचारी होने का भी काफी कम अवसर रहता था. जनता में उनकी सेवा की विश्वसनीयता रहती थी जिससे उनके प्रति सम्मान रहता और कभी अप्रिय निर्णय भी लेते तब भी जनता राजी या नाराजी के साथ उसे स्वीकार कर लिया करती थी. कारण उनके पीछे व्यक्ति निष्ठा या विकास की भावना देखी जाती थी. बाद में समय जाते सत्ताकांक्षी स्वार्थी तत्व घुसते गये. विकास के नाम पर, गरीब जनता पर बेशुमार टेक्स लादे गये और उसे नेताओं के ऐश्वर्य भ्रष्टाचार आदि में खर्च किया जाने लगा. जो नेताओं की विश्वसनीयता रसातल में पहुंचाया.

अब चित्र यह है कि छत्तीसगढ़ के पिछले चुनावों में कांग्रेस व राष्ट्रवादी कांग्रेस का दावा रहा कि हमारी सदस्य संख्या कोई २० लाख की है तो कांग्रेस

की १५ लाख के करीब बताई गई उतने उन्हें वोट भी नहीं मिले. किसी ने बताया कि आजकल राजनैतिक पार्टियों की सदस्य संख्या ठेको से बनती है. चंद सेठ या माफिया नेता मिलकर थोक में निजी रूपया देकर रसीदें बनवाकर अपनी दिखावटी शक्ति का प्रचारी रूप जमा देते है और उसी मुताबिक टेलीफोन की डायरेक्ट्री के नामों से रसीदें कट जाती हैं. अगर जांच की जाए तो कई व्यक्ति ऐसे होंगे जो सभी पार्टियों के सदस्य मिल जाएंगें. पार्टी चुनाव या चुनाव कमीशन के आगे कागजों के जत्थे रख दिये जाते हैं उस सुमेरू पर्वत में कौन असली सदस्य खोजे? वैसे ही सम्पन्न पार्टी के पदाधिकारी बनते हैं जिनमें कोई माफिया ठेकेदार लायसन्स परमिट वाले शराब बेचने व बनाने वाले यहां तक कि नकली स्टेम्प पेपर या नोट छापने के धंधेवाले भी विधायक मंत्री या पदाधिकारी बनते रहते है.

एक समय यह भी था जब नेहरू सरकार के मंत्री श्री के.सी.डे बंगाली थे पर चुनाव लड़ते थे राजस्थान के जाट बहुल नागौर से, मौलाना आजाद हरियाणा के गुडगांव से, कृष्ण मेनन-केरली मुंबई से, डॉ. कैलाश नाथ काटजू मध्यप्रदेश के जावड़ा से, मीनू मसानी राजकोट से नौशीरभरूचा जलगांव से, मधुलिमये बिहार के मुंगेर से पार्टी टिकट पर जीतते रहे. आज वैसा कोई साहस तो दूर सोचने तक की हिम्मत नहीं कर सकता. तब सेठ उद्योगपति भी चुनाव में खड़े होते थे पर उनका चरित्र साफ व आदर सम्मान वाला होता था. वे संसद में जाकर उद्योग व्यवसाय से सम्बन्धित समस्याओं पर सरकार को सलाह दिया करते थे. पार्टी द्वारा उन्हें राज्यसभा की सदस्यता भी वरिष्ठता, योग्यता, विद्वता आदि को देखकर दी जाती थी. परंतु बाद का समय ऐसा आया कि रूपया लेकर धनवानों को राज्यसभा की सदस्यता बेची जाती है और वे वहां जाकर बजाय उद्योग व्यवसाय की समस्याओं पर बोलने के अपने निजी उद्योग धंधो हेतु लायसन्स परमिट की जोड़तोड़ तो कई नेताओं के साथ की भागीदारी बना लेते है. इस राजनैतिक प्रभाव को लेकर मिले जुले घोटाले टेक्स चोरी के घपले भी चलने लगते है. कारण कि उनकी खरीदी हुई सीट का उपयोग लायजनिंग के काम में होता है. दूसरा जाति के आधार पर लोकसभा विधानसभा में अक्सर अपराधी गुण्डे, बदमाश, हिस्ट्री शीटर या फिर किसी नेता का बेटा या उसकी विधवा को खड़ा किया जाने लगा है. खुद इन्दिरा जी ने १९८० में ऐसे लोगों को खड़ा किया जो हवा के बहाव में जीत भी गये. साथ ही उन्होंने अपने छोटे बेटे संजय फिर राजीव गांधी को आगे किया. संजय गांधी की युवा जमात जिसका काम अदालतो, संसद व विधानसभा में उधम मचाने या बोलते हुए सम्माननीय वक्ताओं को हूट करने या अपमानित करने का हुआ करता था. उनके बेटे संजय गांधी और उसके साथियों ने कोर्टों में बजाय अदब रखने के उत्पात मचाने का काम किया था तब किसी को न्यायालय का सम्मान शब्द याद नहीं आया था. चेन्नई विधानसभा में तो तब की विपक्षी नेता जयललिता के कपड़े तक फाड़े गए. अन्य किसी विधानसभा में सदस्य ने अपनी धोती खोल कर अंग प्रदर्शन किया. राजस्थान विधानसभा के एक मंत्री ने प्रश्न के जवाब में हाथ के इशारे से धोती की तरफ अश्लील हरकत की थी. राज्यसभा में फिल्मी कलाकारों व धनवानों को मुंह मांगी रकम लेकर या फिर उसके प्रचारी ग्लेमर को लेकर चुना जाने लगा या उनमें के कई जीतने जैसे नहीं थे तो उन्होंने थैलियों के मुंह खोल दिये और विधायकों की खरीद फरोख्त कर क्रास वोटिंग द्वारा राज्यसभा की जीत हासिल कर ली. जीतने के पश्चात उन्हें वहां किसी कार्यवाही में दिलचस्पी नहीं होती शिवाय अपने निजी स्वार्थ या प्रतिष्ठा प्राप्त करने के. विपक्ष में रहे या सत्ता पक्ष में उनका काम सरकारी समर्थन का होता है कारण सरकारी विरोध की कीमत चुकानी पड़ती है.

पिछले ३५ वर्षो से विधायक एवं सांसद खरीद फरोख्त द्वारा दलबदली होती है. उन सबके पीछे केवल और केवल धन या प्रलोभन ही कारण हुआ करता है. इससे पार्टियों की साखगिरी है तो

एक समय था जब नेहरू सरकार के मंत्री श्री के.सी.डे, बंगाली थे पर चुनाव लड़ते थे राजस्थान के जाट बहुल नागौर से, मौलाना आजाद हरियाणा के गुडगांव से, कृष्ण मेनन-केरली मुंबई से, डॉ. के. एन.काटजू मध्यप्रदेश के जावड़ा से, मधुलिमये बिहार के मुंगेर से पार्टी टिकट पर जीतते रहे. पर आज कोई साहस तो दूर सोचने की हिम्मत भी नहीं कर सकता. तब सेठ उद्योगपति भी चुनाव में खड़े होते थे पर उनका चरित्र साफ व आदर सम्मान वाला होता था. वे संसद में जाकर उद्योग व्यवसाय से सम्बन्धित समस्याओं पर सरकार को सलाह दिया करते थे.

सिद्धातों आचरणो, उद्‌देश्यों का भी माखौल उड़ा हैं. केवल धन को माध्यम बनाकर तमाम तरह के लोग शराबी, शराब उत्पादक या विक्रेता, फर्जी झाड़ बेचकर जनता को लूटने वाले या रिश्वतखोर गुण्डे माफिया या फिर एक पत्नी के रहते दूसरी शादी करने वाले लोगों को लोकसभा या उच्च्व सदन राज्यसभा में स्थान दिया जाने लगा है. ऐसे चुने हुए प्रतिनिधियों के लिये चाहें जिस भाषा में सच्चा झूठा आक्षेप अगर लिखा जाए तो भी एक बार जनता में सच ही माना जाएगा, कारण कि ऐसे नेताओं और पार्टियों की विश्वसनीयता पूरी तरह समाप्त हो चुकी है.

तत्काल ही रिश्वत बोफोर्स, तहलका, ताबूत या जूदेव प्रकरण टीवी पर देखे गये उससे भी अधिक शरम तो तब लगता है कि उस पर जांच या कार्यवाही रिश्वत लेने वालों या देने वालों की नहीं होकर शिकायत करने वाले या तथ्य प्रकटने वालों पर होती है. तुमने यह टेप या सबूत बिना अनुमति के क्यों उतारा? मतलब कि हम जो भी गुनाह अपराध कर रहे हैं वह जायज-नाजायज जैसा भी है हमारा निजी हैं परंतु तुम उसकी टेप कैसे उतार सकते हो? या ऐसा करने से पूर्व हमारी सहमति लेनी चाहिये अन्यथा हमारे निजी जीवन में हस्तक्षेप माना जाएगा. अपराधी मजे से पदों का आनंद लूट रहे हैं बिचारे फरियादी वर्षो तक कोर्टो के चक्कर लगा रहे हैं. लालू, मुलायम, जयललिता आदि के उदाहरण देखे जा सकते है यह भी संभव है कि वे कभी अपने प्रभाव व रसूख द्वारा फरियादकर्ता की हत्या कराके सबूतों व मामले को रफा दफा भी करा सकते हैं. पूर्व में ऐसे मामले नगरवाला काण्ड, हर्षद मेहता, पिल्लई आदि की हत्याओं के कारण दबे भी है और आगे तेलगी के मामले में भी यही होने की संभावना चर्चा में सुनी जाती है. तेलगी मामले से उसे तो पकड़ा गया पर उसके अपराध से सहयोगी बड़े नेता खुले घूम रहे है या उच्च्व पदों पर विराजित है. धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं में भी यही होने लगा है. अच्छे अच्छे धर्म गुरू कथावाचक आश्रमों के अधिष्ठाताओं के कार्यक्रमों में मंच पर और मंच के आगे की पंक्तियों में नामी गिरामी या बदनाम धनवान बैठे हुए दिखाई देगें. उनमें से कई तो व्यवसायी माफिया होगें, कोई तस्कर, मिलावट खोर या बेईमान होगा जिसने लोगों को धोखा दिया या उनका रुपया डुबोया है या जिन पर तरह तरह के अपराधी केस चलते हो इस तरह की अध्यात्म सेवा की आड़ में बावजूद उनकी तस्करी मुनाफा व मिलावटखोरों की प्रवृति जारी रहती है. वे सब उन धर्मगुरूओं के दानदाता होते हैं उनके आश्रमों के ट्रस्टीज होते हैं. वैस धर्म गुरुओं की कमजोरी या मजबूरी वो धनवान होते हैं जो उनके कार्यक्रमों के शानदार पाण्डाल बनवाते हैं, आयोजन का लखलूट खर्चा विज्ञापन आदि का तथा उनके पांच तारक आश्रमों हेतु बड़ी रकम का दान भी करते हैं. जनता पर उनके प्रवचनों का उनके उपदेशों का क्या प्रभाव बनेगा? उनके अनुयाई और धर्म गुरू दोनों ही यथास्थान बने रहते हैं. वे कथित धर्मगुरू जनता को मोक्ष दिलाने हेतु अपने प्रवचनों में मोहमाया का त्याग करने या रूपया हाथ का मैल है बताया करते हैं. पर वे स्वयं उसी मोहमाया व धन के पीछे मालामाल हो रहे है. उनके गले में शरीर पर हाथों में सोने चांदी जवाहरातों की कीमती वस्तुएं अंगूठियां घड़िया आदि होती है. उनके आश्रम एयर कण्डीशन्ड होटलों की तरह ऐश्वर्य सम्पन्न होते है जिसके लिए धन की इफरात वही धनवान किया करते हैं. उनके प्रवचनों का असर जब खुद उन पर हीं नहीं होता. उन धनवानों पर नहीं होता तो बाकी जनता पर क्या होगा? कथनी करनी का यह फरक एक तरह से धार्मिक आचरणों का भ्रष्टाचार बन चुका है. यही वजह है कि सामान्य जनता के मार्गदर्शक धर्मगुरू समाज नेता या राजनेता उनका बाहय ढोगी स्वरूप ही आज के चरित्र पतन का मुख्य कारण है. जनता जब तब इसे नहीं समझेगी. नेता और धर्मगुरू के निजी ऐश्वर्य की तरफ उंगली नहीं उठाएगी. उनके चंगुल से मुक्त नहीं होगी तब तक यह सिलसिला इसी तरह चलता रहेगा.

सेवाभावी सामाजिक संस्थाओं का भी यही हाल है. पहले कभी व्यक्ति की सेवा और आचरण देखा जाता था उसके बाद उसे संस्था में महत्व का स्थान या पद मिलता था परन्तु आज उल्टा हो गया है, सेवाभावी या सिद्धान्तनिष्ठ आचरण आग्रही को धकेल कर बाहर कर दिया जाएगा और गलत लोगों को मंचासीन किया जाएगा. उन्हें पदाधिकारी या मुख्य अतिथि बनाया जाएगा. उन सामाजिक संस्थाओ में अब ऐसा आचरण का कोई मूल्य नहीं रह गया हैं. उनकी सदस्यता का भारी भरकम शुल्क होता है. बड़ी-बड़ी धार्मिक संस्थाए, आश्रम, सामाजिक संस्थाए सभी व्यवसाई बन चुके है. जिन्हें कीमत देकर खरीदा जा सकता है. ऐसी स्थिति में गरीब का, जनता का, समाज का, या धर्म का या फिर आचरण का सेवा का क्या भला होगा? धन से खरीदे व बिकने वालों लोगों को जहां महत्व मिलेगा, दलबदली रिश्वतखोरी या माफियागिरी का जहां महत्व मिलेगा, दलबदली रिश्वतखोरी या माफियागिरी का जहां प्रभुत्व बनेगा. वही हमारी सार्वजनिक सामाजिक या धार्मिक प्रवृत्तियों व संस्थाओं के पतन का प्रमुख कारण है और रहेगा वही हमारे चरित्र का वास्तविक स्वरूप है.

साभारः समाज प्रवाह, सितम्बर २००७

हास्य-व्यंग्य

कुछ आप ही सुझायें

✍ अजय चतुर्वेदी 'कक्का',
सोनभद्र, उ.प्र.

एक दिन एक संपादक का फोन आया. नेताओं के ऊपर एक अच्छे लेख की आवश्यकता जताया. मैंने उनका अनुरोध स्वीकार कर एक लेख भेजा. लेख पाने के बाद उनका पुनः फोन आया. उन्होंने फोन पर मुझे जो भी सुनाया. उसका कुछ अंश आपसे बॉट रहा हूँः-

......आपके लेख ने मेरे विश्वास का खून कर दिया है.....हमारे लोकतंत्र के फलने-फूलने के पीछे आपने नेताओं का हाथ बताया है......इतनी झूठी और घटिया बात लिखने के लिए आपने कितना घूस पाया है.... आपका कहना है कि आपस में लाख कलह के बावजूद हमारे नेता लोकतंत्र के प्रति समर्पित है....यही कारण है कि एक ओर जहां विश्व के तमाम लोकतंत्र कभी पटरी पर चलते तो कभी पटरी से उतरते रहते हैं. वहीं हमारा लोकतंत्र दिनो-दिन गति पकड़ता जा रहा है....यह सच है कि देश में नेक और ईमानदार नेता भी है. लेकिन कितने? क्या दो-चार प्रतिशत अच्छों के कारण सभी को अच्छा मान लिया जाए? अच्छाई-बुराई का योग सभी में होता है. जिसमें अच्छाई अधिक हो वह अच्छा और जिसमें बुराई अधिक वह बुरा माना जाता है.....लेकिन आपने तो पाशा ही पलट दिया....कहीं आप के भी अंतर में नेताओ का बीज तो अंकुरित नहीं होने लगा है......अगर ऐसा नहीं है तो सत्य लिखने का साहस कीजिए और प्रतिशत को ध्यान में रख नेताओं पर सत्य लेख भेजिए. तुलनात्मक भेज सके तो और भी अच्छा रहेगा. एक बार पुनः आप से विनती है कि लिखना है तो सत्य लिखिए. यदि सत्य लिखने का साहस मर चुका है तो लिखना बंद कर दीजिए.

मैं अपनी जलालत-मलालत से आहत संख्याधारित लेख लिखने का निश्चय किया. इसलिए अल्पसंख्यक नेता इसमें खुद को न तो शामिल करेंगे और ना ही बुरा मानेंगें. नेताओं की तुलना के लिए मैंने तमाम उपमानों पर सोचा-विचारा. चोर उपमान सबसे पहले मेरे ध्यान में आया. इस उपमान को मैं लेख में साधता, उससे पहले एक घटना मेरे जहन में कौंध गयी. एक कवि सम्मेलन में एक कवि ने मंच पर कह दिया कि सरकार चोर है. कवि सम्मेलन के बाद पुलिस वाला कवि को थाने ले आया. बोला-बच्चू! मंच पर चढ़ कर शेखियाते हो. सरकार को चोर बताते हो. कवि ने सफाई दी कि मैंने चोर जरूर कहा था, लेकिन ये कहां कि कहा की सरकार चोर है? पुलिस वाला और टाईट हो गया. बोला वाह बेटा! मुझे उल्लू बनाते हो. जैसे कि मैं जानता ही नहीं कि कहां की सरकार चोर है? पुलिस वाला कवि के गले की हड्डी बन गया. कवि सम्मेलन का मानदेय थाने में गल गया. नेताओं को चोर कहने में मेरा कलेजा हिल गया.

दूसरे उपमान पर विचार किया. नेताओं को जोंक कह दिया. अचानक एक बहुत बड़ी जोंक काा चेहरा मेरी आंखो में उभर आया. जोंक ने भरमाया. आप ये क्या कर रहे है. हमारी तुलना नेताओं से कर रहे हैं? मुझे तो आप किसी एंगिल से लेखक नहीं लग रहे हैं. विधाता ने हमें जीवित रहने के लिए केवल खून पीने का अधिकार दिया है. तभी तो हम खून पीते हैं लेकिन क्या आप हमें अपनों को लहू पीते देखे हैं? अपने तो अपने हैं, हम हमारे बीच(जल) रहने वालों तक को नहीं छूते हैं. इंसानो के बीच से पैदा हुए नेता! ओफ! तमाम खाद्य पदार्थो के बावजूद गैर तो गैर अपनों तक का खून पीते हैं. आप से प्रार्थना है. बस कीजिए. हमारी तुलना नेताओं से कर हमारा अपमान मत कीजिए.

जोंक की बात सुन मैं चकरा गया. जहॉ से चला था वहीं वापस आ गया. मैं फिर सोचा-विचारा. दिमाग दौड़ाया. नेताओं की तुलना पशुओं से करने का ख्याल आया. ज्यों ही कलम उठाया. खूँटे से बंधी मेरी गाय हुंकारी. ये क्या कर रहे हो कलम के पुजारी. इतने बड़े संसार में बेआबरू करने के लिए

क्या हम ही बचे हैं. हममें और नेताओं में ऐसी कौन-सी समानता है जो तुलना करने जा रहे हो? प्राकृतिक व्यवस्था के विपरित क्या हम भी खाते-पीते, आचरण-व्यवहार करते और एक दूसरे की नाक काटते हैं? क्या हम भी हवाला-घोटाला करते, एक-दूसरे की पगड़ी उछालते और टॉग खींचते हैं? देश-दुनिया के सामने जिस तरह ये नंगे हो रहे है. क्या हम भी नंगे होते हैं? ईश्वर ने जितनी सामर्थ्य हमें अपनी इज्जत ढकने को दी है, उतनी हमेशा ढके रहते हैं. समझ में नहीं आता कि आप नेताओं की तुलना हमसे किस आधार पर करते हैं. गाय की बात में मुझे दम नजर आया और फिर मेरा चिंतन नाली के कीड़ों से जा टकराया.

मैंने सोचा कि नेताओं को नाली के कीड़े कहने में क्या हर्ज है. कीड़े तो कीड़े हैं. बुरा नहीं मानेंगें. संपादक को मन चाहा लेख और मेरे ऊपर साम्प्रदायिकता का लगाया गया आरोप मिट जायेगा. नेताओं की तुलना नाली

के कीड़ों से कर और भी फॅस गया. मुसीबत में और बुरी तरह से कस गया. मेरे घर के बगल में बहने वाले नाली के कीड़े उछल-उछल कर मेरे घर में जुटने लगे. मैं चकराया-अरे भाई! आप लोग ये क्या कर रहे हैं. कीड़े बोले-हम आपके घर में रहने आ रहे है. मैंने पूछा क्यूँ? तो उनका प्रतिनिधित्व करने वाला एक कीड़ा बोला-हम कीड़े ही सही लेकिन बदनाम घर में कैसे रह सकते है? मैंने पूछा कौन सा बदनाम घर? वह बोला-वाह भाई! एक तो हमारे रहने के स्थान को नेताओं के साथ जोड़ कर उसे बदनाम करते हो. ऊपर से अनजान बनते हो. अरे! हमारी नाली गंदी-बदबूदार ही सही मजलूमों के खून से नहायी, ना जाने कितनी अबलाओं के सिंदुर से रंगी और चीखों से भरी नेताओं के महलों-दुमहलों से पवित्र हैं. अगर इनकी तुलना कीड़ों से करते तो हम बुरा नहीं मानते. क्योंकि कीड़ो के भी कई रुप-नाम और अलग-अलग काम है. चूँकि आपने हमारे घर को बदनाम किया है. इसलिए हम लोगों ने आपके घर में रहने का निश्चय किया है.

मैं अपनी गलती के लिए कीड़ो से सॉरी बोला. अपनी बुद्धि का आखिरी द्वार खोला. नेताओं के क्रिया-कलापों को मद्देनजर रख उन्हें राक्षसों से ज्यों ही जोड़ा. एक भयानक राक्षस प्रकट हुआ. मुँह खोला. एक-एक शब्द चबाते हुए बोला-नेताओं की तुलना हमसे करते हुए शर्म नहीं आयी. अरे! हम राक्षसों का भी एक वसूल है, एक धर्म है, एक निश्चत कर्म है. हम हमेशा अपनी रीति-नीति पर चलते हैं. हम नेताओं की तरह अवसर देख रंग नहीं बदलते है. जो दुश्मन है वह दुश्मन और जो दोश्त है वह दोस्त है. हम दोस्ती के नाम पर पीठ में छुरा नहीं भोपते हैं. शर्म नहीं आती. समझदार होकर नासमझी की बात करते हैं. हमारी तुलना नेताओं से करते है.

खुदा की कसम मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि नेताओ की तुलना किससे कर लेख को पूरा करूं. एक ओर मेरे लेखन-निरपेक्षता पर संपादक का लगाया गया प्रश्न चिन्ह है तो दूसरी ओर जिससे भी तुलना करता हूँ. वे अपनी तुलना किये जाने से खिन्न हैं. मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं? किससे तुलना करूं? यदि आपके समझ में कोई उपमान आये तो मेरा सहयोग कीजिएगा. अपनी सुविधानुसार किसी भी माध्यम से सूचित कर दीजिएगा.

मानद उपाधि हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित किया जा रहा है. इस वर्ष से निम्न मानद उपाधियॉ भी प्रस्तावित है-

०१ हिन्दी रत्न- हिंदी भाषा के उत्थान हेतू किये गये कार्यो के आधार पर किसी अहिन्दी भाषी भारतीय/विदेशी को दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान होगा. ११०००रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०२ हिन्दी भाषा रत्न-हिंदी भाषी/अहिन्दी भाषी साहित्यकार जो हिंदी साहित्य की सेवा किसी भी विधा में कर रहा हो. हिंदी की किन्हीं दो विधाओं की दो पुस्तकें अथवा हस्तलिखित पाण्डुलिपि (खण्ड काव्य/उपन्यास/कहॉनी संग्रह/संस्मरण/शोध ग्रंन्थ/ आलेख) कम से कम १०० पृष्ठ की होनी अनिवार्य है. यह हिंदी साहित्य के दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान होगा. इसमें ११०००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०३ हिन्दी गौरव-हिंदी भाषा के विकास हेतू किये गये कार्यो के आधार पर किसी अहिन्दी भाषी भारतीय/विदेशी को दी जाने वाली दूसरी उपाधि होगी. इसमें ५१००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०४ हिन्दी भाषा गौरव-हिंदी भाषी/अहिन्दी भाषी साहित्यकार जो हिंदी साहित्य की सेवा किसी भी विधा में कर रहा हो. हिंदी की किन्हीं दो विधाओं की दो पुस्तकें अथवा हस्तलिखित पाण्डुलिपि(खण्ड काव्य/उपन्यास/कहॉनी संग्रह/संस्मरण/शोध ग्रंन्थ/ आलेख) कम से कम ५० पृष्ठ की होनी अनिवार्य है. यह हिंदी साहित्य के लिए दी जाने वाली दूसरी उपाधि होगी. इसमें ५१००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०५ हिन्दी श्री- हिंदी भाषा के विकास हेतू किये गये कार्यो के आधार पर किसी अहिन्दी भाषी भारतीय/विदेशी को दी जाने वाली तीसरी उपाधि होगी. इसमें २५००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

०६ हिन्दी भाषा श्री-हिंदी भाषी/अहिन्दी भाषी साहित्यकार जो हिंदी साहित्य की सेवा किसी भी विधा में कर रहा हो. हिंदी की किसी १ विधा की १ पुस्तक अथवा हस्तलिखित पाण्डुलिपि (खण्ड काव्य/उपन्यास/कहॉनी संग्रह/संस्मरण/ शोध ग्रंन्थ/ आलेख) कम से कम ५० पृष्ठ की होनी अनिवार्य है. यह हिंदी साहित्य के लिए दी जाने वाली तीसरी उपाधि होगी. इसमें २५००/-रुपये, मानद उपाधि, व स्मृति चिन्ह प्रदान किए जाएंगे.

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें

सचिव,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी ,मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

अहिन्दी भाषी रचनाकार

मुद्दा

✍ **डॉ० जॉर्जकुट्टी वट्टोत्त,**
शोध निदेशक, हिन्दी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग, सेंट थाम कॉलेज, केरल

कैदी हो जाती बुजुर्ग मॉं

आज का युग अर्थप्रधान एवं उपयोगितावादी युग है. इसलिए इस युग में प्रत्येक वस्तु एवं व्यक्ति का मूल्य उपयोगिता की तुला पर तौला जाता हैं. आज के तथाकथित आधुनिक मनुष्य बूढ़े मॉं-बाप को भी इस तुले पर तौलता है. इसका सहज परिणाम यह निकलता है कि बूढ़े लोग स्वपुत्र के घर में भी उपेक्षा का पात्र बन जाते हैं. इस स्थिति में बुजुर्गो को अपना जीवन निरर्थक, संकटपूर्ण एवं दुस्सह प्रतीत होता है. कभी-कभी वे पुत्र के घर में कैदी का सा एकांत जीवन बिताने के लिए मजबूर हो जाते है. इस दशा में वे बेहद उदास होकर दम घुटने लगते है. आधुनिक युग के मूल्य-विघटन को और बुजुर्गो की दुरवस्था को उजागर करते हुए समकालीन कहानीकारों ने अनेक कहानियों की रचना की है. डॉ० कामेश्वर प्रसाद सिंह लिखते हैं-"विघटित जीवन मूल्यों के परिणामस्वरुप परम्परागत स्थापानाऐं एवं आदर्शो का खण्डन हुआ है. यह प्रक्रिया परिस्थितिगत यथार्थ का परिणाम है और नई कहानी ने इसे जीवंत रूप में रेखांकित किया है."

वृद्धावस्था में अवहेलित, उपेक्षित और घृणित होने वाली आम नारी का मार्मिक चित्रण उषा यादव कृत 'अदृश्य दीवारों की कैद' शीर्षक कहानी में हुआ है. कहानी का प्रमुख पात्र एक ममतामयी मॉं है जिसके पति की मृत्यु हो चुकी है. उसके पुत्र विवाहित होकर शहर में रहते हैं. सायंकाल में बेटे के साथ रहने का वह बड़ा आग्रह प्रकट करती है. एक दिन वह गॉंव से शहर में बेटे के सुविधापूर्ण घर पहुंचती है. लेकिन बहू उसे अपने स्वतंत्र और बेरोकटोक जीवन के लिए एक बाधा समझने लगती है. धीरे-धीरे पोते भी उसकी उपस्थिति से अप्रसन्न हो जाते है. यद्यपि उसका बेटा चुप रहता है फिर भी उसे सांत्वना देने वाला कोई कार्य नहीं करता. मतलब है कि परिवार का कोई भी सदस्य उसके प्रति प्यार, परवाह, सम्मान, आदर आदि नहीं प्रकट करता. इस दशा में वह बेहद खिन्न होकर तनहा कैदी की तरह दम घुटती है. वह सोचती है कि यथाशीघ्र शहर छोड़कर अपना गॉंव लौट जाना ही श्रेयस्कर है. अपना निर्णय सुनकर पुत्र को धक्का न लगने के इरादे से वह भोली मॉं अत्यंत सहज और नरम ढंग से बताती है. "सारी जिन्दगी गॉंव की धरती पर गुजारी है, धरती की महक अपने पास बुलाती है." लेकिन मॉं का निर्णय सुनकर पुत्र को धक्क नहीं लगता और वह विशेष एतराज नहीं प्रकट करता! अगले दिन ही मॉं गॉंव के लिए निकल पड़ती है. पुत्र के घर से बाहर आकर वह बहुत आश्वस्त हो जाती है. उसे लगता है वह पुत्र, बहू और बच्चों द्वारा निर्मित अदृश्य दीवारों की तनहा कैद से मुक्त हो गयी है.

भगवान याद तुम्हारी आती है

रोज सवेरे सूरज जगमगाती है
सब ओर प्रकाश फैलता है
चिड़ियॉं जब सुरीली से गाती है
भगवान याद तुम्हारी आती है।
चॉंद नक्षत्र चमकते समय
नदियॉं बहते, गाय चरते समय
हरे भरे पेड़ों को देखते ही
भगवान याद तुम्हारी आती है।
फूल खिलते ही, बच्चा मॉं के पास आते ही
हमारे संकट दूर होते ही
गुरु की कृपा पाते ही
भगवान याद तुम्हारी आती है
यह मेरा भूमि यह मेरा भूमि
कहकर झगड़ा करते समय
स्वार्थ से मानव भरा रहता है
ये सब भगवान का है कहकर
भगवान याद तुम्हारी आती है।

डी.के.लिंगराज, शिमोगा, कर्नाटक

तुहिना चल

दिव्य तुम्हारा
उन्नत भव्य भाल
नित विमल
तुहिनाचल
तुम भारत भाग्य
चिर अटल।
शिखरों पर
तुम्हारें खिलते हैं
ब्रहमकमल।
तुम केदार
बदरी के पावन
तीर्थ महल।
पहने खड़े हो
गंगा की उज्जवल
माला सजल।
सौम्य महर्षि
तपोलीन गिरीश
तुम विरल।
साक्षात शिव
तुम मंगलमय
संत विरल।

नलिनी कान्त, अंडाल, पं. बंगाल

गुरू नानक देव जी

डॉ० मनमोहन सिंह, मोहाली

भाई गुरूदास जी १५वीं शताब्दी के हालात के बारे में इस प्रकार लिखते हैंः-'कल आयी कुत्ते गुही खोज होवां मुरदार गुसाई
राजे पाप कमांवदे उल्टी वाड़ खेत क्यूं खाई।
प्रजा अंधी ज्ञान बिन कुड़ दुस्त मुखहू अलाई,
चेले साज बजाइदे नचड़ गुरहु बत विष ताई।
सेवक बैठे घरां विच गुरू उठ घड़ी तिनाडे जाई,
काजी हेये रिश्वतीं बंडी ले के हक गबाई।
स्त्री पुरखे दाम हित भावे
आई कि थाऊं जाई
वरतियां पास सवं जग माही।'

भाई गुरदास जी की कविता से स्पष्ट है कि उस समय अंधकार था. लोग अंधविश्वास में फंसे हुए थे, धार्मिक स्थानों के पुजारी भी भ्रष्टाचार कर रहे थे. राजा लूट-खसोट करते थे तथा उन्हें लोगों की भलाई की कोई चिन्ता नहीं थी. स्त्री की इज्जत लूटी जा रही थी. जात-पात को आधार मानकर लोगों से भेदभाव किया जा रहा था. पांखडियों का जोर था. गरीब आदमी की हालत बहुत ही दयनीय थी. यह कुदरत का असूल है कि जब पाप का पलड़ा भारी हो जाता है तथा आतंकित शक्तियां दैवी शक्तियों पर हावी हो जाती है तो परमात्मा एक ऐसे पुरूष को जन्म देता है जो कि आंतकित शक्तियों का मुकाबला करता है तथा लोगों को ठीक रास्ते पर ले जाता है. वह ऐसे ढंग से उपदेश देता है कि समस्त जनता उसकी अनुयाई हो जाती है. इसी प्रकार १४६९ ई. में कार्तिक की पूर्णमासी वाले दिन ननकाना साहब में गुरू नानक देव जी ने जन्म लिया. भाई गुरदास गुरू जी के जन्म के बारे में इस प्रकार लिखते हैः-सतगुरू नानक प्रकट होईया, मिटी धुन्ध जग चानण होईया। जिऊं कर सूरज निकलिया,
तारे छिपे अंधेर पलोया।

भाई गुरदास जी की उपरोक्त पंक्तियां बिल्कुल ठीक हैं. क्योंकि गुरू नानक देव जी के जन्म से अन्धकार समाप्त हो गया तथा जग में उजाला हो गया. उनकी आंखों में रूहानी चमक तथा मस्तक लशकारे मारता था. जब वे पण्डित के पास पढ़ने के लिये गये तो उन्होंने ऐसे सवाल पूछे कि पंडित जबाब न दे सके. जब उन्होंने सवालों का जवाब दिया तो पण्डित बाबा नानक के चरणों में गिर गये. उन्होंने एक दिन नहाते समय नदी में डुबकी मारी तो बाहर न निकले. बहुत ढूढने के बाद भी न मिल सके. ऐसा कहा जाता है कि बाबा नानक को परमपिता के सन्देश वाहक ले गये तथा उन्हें परमात्मा के नाम का प्रचार करने के लिए कहा गया. संसार में जाओ सुमिरन करो तथा अंधकारमयी जनता को उपदेश दो, तुम्हारा जीवन नाम, दान, सेवा, स्नान तथा सुमिरन में व्यतीत हो.

गुरूजी कहते हैं जो कुछ भी मैं कह रहा हूॅं, वह ईश्वर द्वारा कहने के लिए आदेश मिला है. गुरूजी ने जात-पात, धर्म के नाम पर भेदभाव को दुत्कार कर कहा-'ना कोई हिन्दू ना मुसलमान' गुरू जी के ये शब्द मुसलमान हाकमों को बहुत बुरे लगे. परन्तु गुरू जी का यह कहने का अर्थ यह था कि मनुष्य तो केवल मनुष्य हैं. घृणा, भेद-भाव, ऊंच-नीच, धर्म के आधार पर करना ठीक नहीं है. वे लिखते है कि परमात्मा की दया केवल उनके ऊपर होती है जो उसके नाम का सुमिरन करते हैं. कर्त्तव्य के हिसाब से कोई भी ऊंचा-नीचा नहीं होता. उन्होंने जात-पात प्रणाली को जड़ से खत्म करने की कोशिश की, प्रत्येक मनुष्य को बराबर समझने का उपदेश दिया-नीचा अन्दर
नीच जात, नीची हूं अत नीच,
नानक तिनके संग साथ वडिया,
सा क्या रीस।

गुरू नानक देव जी उनका साथ देते है जो हाथों से मेहनत करके रोजी कमाते हैं. जो दूसरों की मेहनत के ऊपर ऐश करते हैं वे उनका साथ देने के लिए तैयार नहीं. वे दूसरे के हक के बारे में इस प्रकार लिखते है.

हक पराईया नानक, उस सूअर उस गाय।

गुरूजी ने जपजी साहब की रचना की उसकी पहली पंक्तियों से ही गुरूजी के विचार स्पष्ट हो जाते है. उनके दो मुख्य सिद्धात है-ईश्वर एक है. मानव भाई चारा. वे सभी मानव जाति के भले के लिए बात करते हैं वे लोगों के ऊपर अफसरों द्वारा किये जा रहे अत्याचार सहन नहीं करते.

गुरूनानक देव जी से पहले किसी ने भी इस प्रकार स्त्रियों के हक में नहीं कहा तथा पैर की जूती नाम का साधान कह कर दुत्कारा. परन्तु गुरू साहब ने स्त्री जाति को ऊंचा उठाने के लिए सबसे पहले आवाज उठायी, ताकि उसकी सामाजिक दशा सुधर सके. उन्होंने सती प्रथा का भी खंडन किया.

गुरूजी ने गृहस्थी जीवन छोड़कर जंगलों में जाना तथा वहां जाकर भक्ति करने की भी आलोचना की है. वे गृहस्थी जीवन को सबसे ऊंचा मानते हैं तथा कहते हैं हमें इस संसार में रहकर अच्छे कार्य करने चाहिए. सच बोलना चाहिए तथा जरुरतमंद की सहायता करनी चाहिए तथा किसी के ऊपर जुल्म नहीं करना चाहिए. वे कहते है-कमल के फूल की तरह कीचड़ में रहते हुए भी साफ-सुथरा रहना चाहिए.
जैसे जल में कमल निरालम
मुरगाबी निसाने।

गुरू साहब हर प्रकार के तरीकों से लोगों के दिलों से भ्रम दूर करते है. उन्हें सही रास्ते पर चलने का तथा परमात्मा की भक्ति का उपदेश देते हैं.

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949,Web: www.swargvibha.tk.com

नवम्बर २००९ तक प्रकाशित पुस्तकें

मधुशाला की मधुबाला (खण्ड काव्य) प्रथम संस्करण	लेखकः राजेश सिंह	मूल्यः १० रुपये
अपराध (खण्ड काव्य)	लेखकः राजेश सिंह	मूल्यः २१ रुपये
मधुशाला की मधुबाला(खण्ड काव्य)द्वितीय संस्करण	लेखकः राजेश सिंह	मूल्यः २५ रुपये
निषाद उन्नत संदेश	लेखकः चौधरी परशुराम निषाद	मूल्यः १० रुपये
सुप्रभात-काव्य संग्रह	संपादकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः २५ रुपये
कैसे कहूँ-काव्य संग्रह	संपादकः सूर्य नारायण शूर	मूल्यः ५१ रुपये
काव्य बिम्ब-काव्य संग्रह	संपादकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः ५१ रुपये
एक अद्भूत व्यक्तित्व-डॉ० अनवार अहमद	संपादकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः २५ रुपये
ए आग कब बूझेगी : भाग-१	संपादकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः १०० रुपये
पत्रकार यज्ञ	संपादकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः २१ रुपये
लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग-१	लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः ३५ रुपये
लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग-२	लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः ४०रुपये

संस्थान के सदस्यों को ५०प्रतिशत की छूट, तथा पत्रिका के सदस्यों को २५ प्रतिशत छूट पर सभी किताबें उपलब्ध है.

रा०हिन्दी मासिक ‘विश्व स्नेह समाज‘ के विशेषांक

पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक मूल्यः १० रुपये
देवरिया विशेषांकः मूल्यः ०५ रुपये
इलाहाबाद विशेषांक मूल्यः ०५ रुपये
माघ मेला विशेषांक मूल्यः ०५ रुपये
डॉ० रामकुमार वर्मा विशेषांकः मूल्यः ०५ रुपये
डॉ०राज बुद्धिराजा विशेषांक मूल्यः २५रुपये
छायावादी कवियित्रीः डॉ० तारा सिंह विशेषांक मूल्यः २० रुपये
सुश्री बी.एस.शांताबााई विशेषांक मूल्यः २५ रुपये
बाल साहित्यकारः डॉ० विनय मालवीय विशेषांक : मूल्य १०/-

पत्रिका के उपरोक्त सभी विशेषांक विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के सदस्यों को २५प्रतिशत, पत्रिका के सदस्यों को १५ प्रतिशत तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्र के निवासियों को १० प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है. विशेषांको की प्रति मंगवाने के लिए संपादक, विश्व स्नेह समाज, इलाहाबाद के नाम से मल्टी सीटी चेक/बैंक ड्राफ्ट/धनादेश अथवा निर्धारित मूल्य का डाक टिकट अपना स्पष्ट नाम, पूर्ण पता लिखकर मंगवाया जा सकता है. सामान्यतयाः किताबें साधारण डाक से भेजी जाएगी. रजिस्ट्री या कोरियर से मंगवाने के लिए इसका भुगतान आपको स्वयं करना होगा.
लिखें

संपादक, रा.हि. मासिक विश्व स्नेह समाज,
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

<u>Photo</u>

Photo

विशेष सदस्यता अभियान

संस्थान के प्रकाशनों में 50प्रतिशत की छूट
हिन्दी की सेवा करने का सुनहरा अवसर
हिन्दी/अहिन्दी भाषियों का हिन्दी की सेवा करने का अद्वितीय मंच
अहिन्दी भाषियों को विशेष छूट

संस्था का उद्देश्यः हिंदी को पूरे भारत की भाषा बनाना ० हिन्दी को राज-काज की भाषा बनाना ० समाज सेवा स्नेहाश्रम (हिंदी विश्वविद्यालय, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम)

सदस्यताः कोई भी व्यक्ति जो हिंदी सेवी हो या हिंदी में अभिरुचि रखता हो.

मुख्य शाखाः

साधारण सदस्यः २५/-रु० वार्षिक,
साधारण सदस्य विशेष श्रेणीः १५०/रुपये (पांच वर्ष की सदस्यता + एक वर्ष विश्व स्नेह समाज की प्रति निःशुल्क)
स्थायी सदस्यः१५०/रुपये वार्षिक, आजीवन सदस्य-५०१/रुपये, सरंक्षक सदस्य-११००/रुपये

युवा शाखाः (उम्रः १५ से ३० वर्ष तक)

साधारण सदस्यः १५/-रु० वार्षिक,
साधारण सदस्य विशेष श्रेणीः १२५/रुपये (पांच वर्ष की सदस्यता + एक वर्ष विश्व स्नेह समाज की प्रति निःशुल्क)
स्थायी सदस्यः ५०/रुपये वार्षिक, आजीवन सदस्य-२५०/रुपये, सरंक्षक सदस्य-५०१/रुपये

बाल्य शाखाः (उम्र ५ वर्ष से १५ वर्ष तक)

साधारण सदस्य-निःशुल्क, साधारण सदस्य विशेष श्रेणीः ६०/रुपये (पांच वर्ष की सदस्यता + एक वर्ष विश्व स्नेह समाज की प्रति निःशुल्क) स्थायी सदस्यः१५/रुपये वार्षिक, सरंक्षक सदस्य-५१/रुपये

आप अपनी सदस्यता राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में **सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद** के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

अधिक जानकारी जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949, www.swargvibha.tk.com

कहानी

रिश्तों का रिश्ता

✍ डॉ० अशोक पाण्डेय
'गुलशन' बहराइच

यह वही जमीन है जिसे पाने के लिए पिताजी जिन्हें हम प्यार से दादा कहते थे और हमारी पट्टी के बड़के दादा जो हमारे खास पाटीदार थे, दोनों ने कमिश्नरी तक मुकदमा लड़ा. जिस दिन मुकदमें की तारीख पड़ती थी, उसके दो दिन पहले से दोनों लोग, अलख सुबह चिड़िया बोलने से पहले ही घर से भूजा और भेली लेकर निकल पड़ते थे और बीस कोस दूर पैदल चल कर अगली रात कटरा में काटकर तब कमिश्नरी पहुॅच पाते थे और इसी तरह दोनों की वापसी भी होती थी, कहकर बड़े भैया फुफकार मारकर रोने लगे थे.

मैंने सहजता से उनकी ऑखों की ओर देखा और उनके अन्तर्मन में छुपे असीम पैतृकता के भाव को महसूस कर उस जमीन के लिए स्वयं द्वारा बुलाये गये ग्राहक को दबे पॉव वापस कर दिया तब जाकर भैया स्वयं को कुछ नियंत्रित और संयत कर पाये थे.

भैया ने तो हमारे घर की वह गरीबी देखी थी जिसमें हमारे घर में सावॉ, कोदौ, ज्वार, बाजरा और मसूर के सिवा खाने को कुछ भी नहीं होता था. खेत भी जो पाटीदारों से बॅटवारे के बाद हिस्से में मिला था वह भी इतना कम कि कुछ और पैदा करने के लिए जगह ही नहीं बचती थी. कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि कई दिनों तक हमें तरकारी तक देखने को नहीं मिलती थी, खाने की बात तो दूर थी. पता नहीं क्यों जब कभी मुझे अपने बुजुर्गो के त्याग और तपस्या के संस्मरण को सुनने का अवसर मिलता है, मेरा मन भावुक हो जाता है, ऑखें भीग जाया करती है और मैं अपने को संसार के सबसे गरीब, उपेक्षित और सर्वहारावर्गीय व्यक्ति से भी अधिक असहाय महसूस करने लगता हूॅ. कभी-कभी सोचता हूॅ कि मैं अगर गरीब ही रहता तो कम से कम अपने दादा की तरह अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ कर सकता, जितना आज सर्व साधन सम्पन्न होकर भी नहीं कर सका.

दादा ने क्या कुछ नहीं किया, हम तीनों भाईयो के लिए. गॉव में सबसे आगे चारों ओर से आने-जाने के लिए रास्ते वाला घर. घर के सामने और बायें आठ बीघे का चक, उसके बगल और आगे कई फलों वाला बाग, मुख्य मार्ग पर बाकी सारे खेत. सभी बड़े बैंको में खाते और ढेर सारा रुपया, चॉदी और सोना और इन सबके साथ-साथ तीन ऐसे लड़के जिनका पूरे इलाके में बराबरी करने वाला शायद अभी तक कोई नहीं.

और सभी के लिए दादा चाहे जैसे रहे हों मगर मेरे लिए तो दादा से प्यारा कोई नहीं रहा. मुझे याद है कि दादा ने मुझे कभी मारा भी नहीं. मुझे यह भी याद है कि दादा के जीवित रहते हुए कभी मैं दादा से अलग नहीं सोया. मुझे यह भी याद है कि दादा ने हमेशा मेरी पसंद का ही कपड़ा मुझे पहनाया.

और सभी के लिए दादा चाहे जैसे रहे हों मगर मेरे लिए तो दादा से प्यारा कोई नहीं रहा. मुझे याद है कि दादा ने कभी मुझसे पढ़ने को नहीं कहा, मुझे यह भी याद है कि दादा ने मुझे कभी मारा भी नहीं. मुझे यह भी याद है कि दादा के जीवित रहते हुए कभी मैं दादा से अलग नहीं सोया. मुझे यह भी याद है कि दादा ने हमेशा मेरी पसंद का ही कपड़ा मुझे पहनाया. मुझे यह भी याद है कि मुझे मेरी मर्जी से शादी करने के लिए दादा ने कभी मेरा विरोध नहीं किया. इतना सहयोगी तो एक अच्छा दोस्त भी नहीं हो सकता है लेकिन दादााा मेरे लिए एक अच्छे दोस्त के समान थे. मैं तो यही कहूॅगा कि दादा मेरे लिए दोस्त से बढ़कर ही थे, तभी तो मेरी बुराइयों पर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया बल्कि मेरी गलतियों को हमेशा माफ करते रहे. जब मैं शहर से स्कूल की छुट्टी होने पर घर आता तो दादा अपना सारा काम छोड़कर मेरे साथ दिन भर रहते, मुझे अपनी थाली में साथ बैठाकर खाना खिलाते और रात में अपने पास लिटाते तथा पूरी रात बातें किया करते. दादा से मेरा रिश्ता आदर्श पिता और बेटे का ही नहीं बल्कि दुनिया के सारे रिश्तों का रिश्ता था जिसे मैं उनके न रहने पर ही जान पाया था.

दादा की संस्मरणीय यादों के स्पर्श से मेरे भावुक मन को थोड़ी राहत जरुर मिल गयी थी किन्तु उनसे संबंधित अन्य अज्ञात प्रसंगो की शेष जानकारी पाने को मै अब भी बेचैन था. इसी बेचैनी की वजह से मैंने बड़े भैया से अपनी दूसरी जमीन के बारे में जानना चाहा तो उन्होंने अगले दिन बताने का बहाना करके टाल दिया. मैं सोचने लगा कि क्या इस जमीन की कहानी और ज्यादा भयावह है या कि आज भैया ज्यादा रोये है इसलिए मन को थोड़ा आराम देने के लिए कल बताने को कहे है. यही सोचकर मैं रात भर नहीं सोया.

सुबह उठा तो भैया के इर्द-गिर्द लगा रहा कि शायद उन्हें यह याद आ जाये और वह खुद ही बता दें. किन्तु सुबह से शाम हो गई और रात होने को आयी. तब तक जब उन्होंने नहीं

बताया तो मैंने हिम्मत करके उनसे फिर पूछा. अबकी बार का जवाब सुनकर मेरा कलेजा मुँह को आ गया. इस बार उन्होंने बताया कि इस बाग वाली जमीन को छोटी बुआ की शादी में एक पाटीदार के हाथ चौदह सौ रुपये पर गिरवीं रखनी पड़ी थी. तब जाकर दादा इज्जत से बुआ को अपने घर से विदा कर पाये थे।

क्या तब बाबा, जिन्हें सब दादू कहते थे, वह जिन्दा नहीं थे, मैंने आश्चर्य चकित होकर बड़े भैया से पूछा. हॉ बुआ की शादी में देने के लिए रखे जेवर और पैसे दादू की फालिश की बीमारी में खर्च हो चुके थे फिर भी दादू बुआ की शादी तक नहीं बच पाये थे। चूँकि बुआ की शादी की तारीख दादू तय कर चुके थे और शादी होने के बाइस दिन पहले दादू चल बसे थे, इसलिए इस शादी का बोझ दादा को उतारना उनके लिए अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने हेतु जरुरी था.

जब दादू गुजरे तब दादा की उम्र कुल पन्द्रह साल थी. उन दिनों हमारे घर में गरीबी का कड़ा इम्तिहान चल रहा था. दादी भी बीमार थी और उनका अब-तब लगा था। पैसे तो कहीं से आ नहीं रहे थे और एक-एक कर घर के सारे कीमती सामान भी औने-पौने दाम पर बिकते जा रहे थे। केवल बाग वाली जमीन ही बच पायी थी जिसके भरोसे दादा जिन्दा थे और पाटीदार भी इसी जमीन पर दॉत गड़ाये थे कि यह कब बिके और वह कब खरीदें।

जब बुआ की शादी के तीन दिन शेष रह गये तो मुखिया बाबा ने दादा से पूछा कि तुमने कुछ इन्तजाम किया कि नहीं. दादा रोने लगे थे और कोई जवाब नहीं दे सके थे. तब मुखिया बाबा ने दादा को चौदह सौ रुपये उस जमीन को दो साल के लिए रेहन पर रखने के बदले सादे कागज पर अँगूठा लगवाकर दे दिया था और कागज अपने पास रख लिया था तब जाकर किसी तरह बुआ की शादी कर पाये थे, दादा.

इस जमीन को गिरवी रखने की बात दादा और मुखिया बाबा के अलावा और कोई नहीं जानता था. डेढ़ महीने बाद जब दादी उस रेहन वाली जमीन में लगे गेहूं की फसल काटने गयी तो मुखिया दादी ने रोक कर कहा-तुम इस खेत में क्या करने आयी हो, यह खेत अब हमारा है, इसे तुम्हारा लड़का गिरवी रख चुका है. इतना सुनते ही दादी अचेत होकर उसी खेत में गिर पड़ी और उसी समय उन्होंने दम तोड़ दिया.

अब दादा के सामने कंगाली में आटा गीला जैसे स्थिति मुँह बाये खड़ी थी. किसी तरह नाते-रिश्तेदारों की मदद से दादी का क्रिया कर्म कर दादा फुरसत पा सके थे. पन्द्रह साल की ही उम्र में दादा के सामने इतनी बड़ी-बड़ी चुनौतियॉ आ चुकी थी और दादा लोहे की तरह तप चुके थे. अब उनके सिर पर अपनी दो बहनों की शादी और एक छोटे भाई के भरण-पोषण के दायित्व का बोझ भी चुनौती बनकर सामने खड़ा था.

दादा अभी तक अविवाहित थे. अतः उन्होंने लाहौर, कराची, बम्बई, लुधियाना एक-एक कर सभी जगह भाग कर पैसे कमाने का प्रयास किया मगर जब उनकी कहीं दाल नहीं गली तो चार महीने बाद भागकर अपने वतन आ गये और तीन कोस पर स्थित बाजार में एक बनिया के यहॉ गल्ले की दूकान पर नौकरी कर ली. सुबह बिना कुछ खाये सात बजे घर से निकलते और दोपहर में एक बजे जब ताबड़तोड़ मेहनत के बाद उन्हें एक खुराक खाना मिलता तो उसी में चाचा जिन्हें हम बप्पा कहते थे, को भी खिलाते क्योंकि उस समय बप्पा वर्नाकुलर की पढ़ाई कर रहे थे.

इसी आधे पेट भोजन और चार आने रोज की मजदूरी पर दादा ने अपनी दोनों बहनों की शादी की. अब घर में दादा और बप्पा के अलावा कोई नहीं बचा था जो खाना-पानी दे सके और घर की रखवाली कर सके. एक-दो खास रिश्तेदारों के जोर-दबाव से दादा की शादी भी हो गई.

दादा की शादी के बाद धीरे-धीरे हमारे घर के दरवाजे से हमेशा दूर रहने वाली मॉ लक्ष्मी का आगमन होने लगा. अम्मा पॉच भाई और पॉच बहनों में सबसे छोटी थी इसीलिए दुलारी भी थी. अम्मा के आने के बाद एक मामा और उनके लड़के जिन्हें हम मामा वाले भैया कहते थे, हमारे घर पर बराबर रहकर खेती बारी सम्हालने लगे थे. उन दिनों हमारे पास बैल भी नहीं थे, इसलिए बैल भी मामा अपने साथ लाते थे और जी तोड़ मेहनत करके रिश्तेदारी का फर्ज निभाते थे. अब दादा कुछ निश्चिन्त हो गये थे. और गांव के पास की नदी के घाट का ठेका जो हमेशा दादू के ही नाम रहता था, को पुनः अपने नाम लेने के लिए दादा लगातार कोशिश करने लगे थे. इस बार ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुन ली थी और वह ठेका पाकर बहुत खुश हुए थे और ठेका मिलने के तीन माह बाद मैं पैदा हुआ. इसके बाद तो दादा ने कितना पैसा कमाया, कितनी इज्जत कमायी और कितने बड़े-बड़े काम कर डाले तुम तो जानते ही हो. इतना कहकर भैया सो गये थे और मुझे भी नींद आने लगी थी.

सामाजिक नियम खुद के और दूसरों के लिए अलग-अलग नहीं हो सकते.

दिखावे रहित की अध्यात्मशिक्षा ही चरित्र सुधार की सीढ़ी हैं.

अध्यात्म

भागवत कथा की प्रासंगिकता

✍कैलाश त्रिपाठी, औरैया, उ.प्र.

श्रीमद् भागवत माहात्म्य के अनुसार कलियुग में भगवद् रूप भागवत शास्त्र को पढ़ना या सुनना सद्यः मोक्षदायक है.

मेनिरे भगद्रूपं शास्त्रं भागवतं कलौ।
पाठानाच्छ्रवणात्सद्यो वैकुण्ठफलदायकम्।।

इसी लोक लुभावन शास्त्रोक्त मान्यता को आधार बनाकर आज के अर्थोपार्जक व्यास आचार्यो द्वारा श्रीमद् भागवत कथा के साप्ताहिक आयोजन गांवो एवं नगरों में स्थान-स्थान पर बहुतायत में किये कराये जा रहे हैं. परन्तु इन कथाओं से श्रोताओं में मनोवृत्तिगत परिवर्तन तक दृष्टिगत नहीं होता तब मुक्तावस्था तक पहुँचना कैसे संभव है? आयोजक और आचार्यो को दक्षिणा द्रव्य को लेकर झगड़ते देखा जा सकता है. परीक्षित नाम्नी भागवत कथा कराने वाले ही अपने पूज्यों पिता आदि से अशिष्ट व्यवहार करते भी देखे जा सकते हैं. ऐसी स्थिति में क्या है इन कथाओं का प्रायोजन और औचित्य? क्या भागवत महात्म्य का सन्दभिति श्लोक मिथ्या मान लिया जाय? यदि श्रीमद्‌भागवत कथा से मुक्ति संभव है तो कैसे? इस प्रश्न पर विचार आवश्यक है और यही है इस आलेख का अभीष्ट. मेरी दृष्टि में प्रत्येक ग्रंथ की अपनी एक भाव भूमि होती है. यह भाव भूमि वह है जिस पर ग्रंथ का प्रणयन हुआ है. ग्रंथ को चेतन मानते हुए इसे हम ग्रंथ की मानसिक अवस्था या मनोदशा भी कह सकते हैं अथवा वैचारिक स्तर भी. ग्रंथ की यह पृष्ठ भूमि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आध्यात्मिक आदि होने के साथ ही विभिन्न स्तरो की हो सकती है. वस्तुतः ग्रंथ की यह भाव भूमि वह होती है जो लेखन के समय उसके लेखक की रही होगी. ग्रंथ के लेखक का यह प्रयास होता है कि वह अपने ग्रंथ के माध्यम से उसके पाठक या श्रोता को अपनी भाव भूमि में पहुंचा दे. परन्तु पाठक या श्रोता का ग्रंथ की भाव भूमि पर पहुँच पाना या न पहुँच पाना कई कारकों पर निर्भर करता है. पहला यह कि पाठक भी भाव भूमि तथा ग्रंथ की भाव भूमि में कितना अंतर है. दूसरा यह कि ग्रंथ का पाठक या श्रोता अपनी भाव भूमि को परिवर्तित करने हेतु मानसिक रूप से सहमत और तैयार है भी या नहीं. यहाँ यह संभावित है कि ग्रंथ का पाठक अपनी वर्तमान भाव भूमि, मनोदशा या वैचारिक स्थिति को श्रेष्ठ मानते हुए बदलना ही न चाहे. ऐसा भी हो सकता है कि वह ग्रंथ की भाव भूमि से सहमत तो है परन्तु उसके अनुरुप अपने को बदलने हेतु तैयार नहीं. उदाहरणार्थ हमने कर्ण की दानवीरता, दधीचि का त्याग सैकड़ो बार पढ़ा और सुना, अच्छा लगा परन्तु मेरे पास उपलब्ध आठ कंबल में से कोई दो मांगे तो हम सहज देने को तैयार नहीं क्योंकि हम अपनी भाव भूमि या मनोदशा को बदलना नहीं चाहते. हमारे लिए कथा तो श्रवण का विषय है न कि अनुसरण का. एक स्थिति यह भी है कि किसी-किसी में अपनी भाव भूमि को ग्रंथ के अनुरूप बदलने की इच्छा तो है परन्तु वह भी बदलने का प्रयास नहीं करता या करना नहीं चाहता.

आज स्थिति यह है कि हम रामायण, गीता, भागवत आदि का पाठ तो करते है और इन ग्रंथों की उच्च भाव भूमि से सहमत भी है परन्तु अपनी भाव भूमि को उनके अनुरूप बनाने को तैयार नहीं. वस्तुतः हम इन ग्रन्थों का पाठ और श्रवण करते हुए भी इन ग्रंथो की भाव भूमि की ओर न चलकर ठीक विपरीत दिशा में चल रहे होते हैं. यद्यपि ग्रंथ का यह प्रयास होता है कि वह अपने श्रोता या पाठक को अपनी भाव भूमि में ले आये. परन्तु श्रोता या पाठक ग्रंथ की भाव भूमि तक पहुँचाने का प्रयास ही नहीं करता. इतना ही नहीं वह तो ग्रंथ की भाव भूमि के प्रतिकूल जाकर अपनी भाव भूमि का निर्माण भी ग्रंथ की भाव भूमि के प्रतिकूल कर रहा है. आज यही विडम्बना है कि हम अपनी मनोदशा, भाव भूमि अथवा मनोवृत्तियों को ऊध र्वोन्मुख करके ऊँचा तो उठाना चाहते है परन्तु तदनुरूप समुचित प्रयास नहीं करते. यहाँ यह भी प्रकाश में लाना है कि यदि कोई अपनी भाव भूमि को भागवत की भाव भूमि तक ले जाने में समय लगेगा. हम श्रीमद्‌भागवत कथा का श्रवण करते हैं परन्तु अपनी भाव भूमि को उसके अनुरूप बनाने का प्रयास नहीं करते. यहाँ भाव भूमि से

शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य

तिरंगी पहेलिया

लेखकः मुखराम माकड़ 'माहिर' **मूल्यः** ५१/रुपये मात्र

प्रकाशकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-९३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ० प्र,
मो० ९३३५१५५९४६, ई मेलः sahityaseva@rediffmail.com

हमारा तात्पर्य मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार अर्थात् अन्तःकरण चतुष्टय की स्थिति से है. ग्रंथ का प्रभाव व्यक्ति के मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार पर ही होता है.

स्पष्ट है कि श्रीमद्भागवत की भाव भूमि में पहुँचे बिना मुक्ति संभव नही. जैसे ही श्रोता या पाठक की भाव भूमि और श्रीमद्भागवत की भाव भूमि में साम्यता, तादात्म्य या एकरूपता हो जाएगी अर्थात् वह श्रीमद्भागवत की भाव भूमि में पहुँच जायेगा तो मुक्त हो जाएगा. लेकिन यह तादात्म्य क्षणिक न होकर स्थायी होना चाहिए. श्रीमद्भागवत की भाव भूमि पर पहुँचकर श्रोता की मुक्ति निश्चित और नितान्त स्वाभाविक है क्योंकि वह भाव भूमि मुक्तावस्था की भाव भूमि है. जब तक श्रोता की भाव भूमि तथा श्रीमद्भागवत की भाव भूमि एक नहीं हो जाएगी मुक्ति का प्रश्न ही नहीं. हमारी भाव भूमि और भागवत की भाव भूमि में इतना बड़ा अंतर है कि हम भागवत के रास पंचाध्यायी में गोवी भाव की कल्पना भी नहीं कर सकते. उक्त सन्दर्भो में एक समस्या यह भी है कि आज वक्ता या उपदेशक भी भागवत की भाव भूमि तक पहुँचे हुए नहीं मिलते. स्थिति तब और भी हास्यापद हो जाती है जब वक्ता श्रोताओं से भी निम्न भाव भूमि पर कथा कह रहा होता है.

श्रीमद्भागवत की भाव भूमि में पहुंचने पर ही मुक्ति संभव है. इस तथ्य के सूत्र सूक्ष्म रूप में भागवत में ही राजा परीक्षित के मुक्त होने, धुंधकारी के प्रेत योनि से मुक्त होने तथा गोकर्ण और देवदूतों के संवाद आदि उपलब्ध है. प्रेत योनि धुंधकारी और शापित परीक्षित की तत्कालीन मनोदशा ऐसी हो गई थी कि श्रीमद् भागवत की भाव भूमि में पहुँचे हुए परम वीतरागी वक्ता द्वारा श्रीमद्भागवत के श्रवण से उनकी भाव भूमि स्थायी रूप से परिवर्तित होकर श्रीमद्भागवत की भाव भूमि पर पहुँच गई. जो कि मुक्तावस्था की भाव भूमि है और वे सद्याः मुक्त हो गए. प्रायः सुनने में आता है कि अमुक ग्रंथ हमारी समझ में नही आया. इसका कारण केवल भाषायी क्लिष्टता या विषय का ज्ञान होना ही नहीं है, भाव भूमि का यही अन्तर भी है. जब सत्य कथा और फिल्मी दुनियां जैसे पत्रिकाओं की हिन्दी भाषा और उसके शब्दों के अर्थ सहज समझ में आ जाते है तब वही भाषा और वही शब्द जब आध यात्मिक आलेखों में होने पर समझ में क्यों नहीं आते. कारण यह कि पाठकों की भाव भूमि फिल्मी पत्रिकाओं के अनुरूप होने से वे सहज उनकी समझ में आ जाती है तथा आध्यात्मिक पत्रिकाओं की भाव भूमि उनके प्रतिकूल होने से वे कठिन प्रतीत होती हे. एक भाव भूमि अत्यन्त ऊँची और एक अत्यन्त नीची.

इसी प्रकार हम सूर, तुलसी, मीरा, कबीर आदि संतो के पद तो गाते है परन्तु इनकी भाव भूमि पर पहुँचने की नहीं सोचते. वस्तुतः गाने वाले का कल्याण पदों के गायन में निहित न होकर इन पदों के माध्यम से सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हुए उनकी भाव भूमि तक पहुँचने में निहित है. गायन तो अर्थोपाजन और मनोरंजन के लिए भी किया जा सकता है. कल्याण का मार्ग तो अपनी भाव भूमि को इन संतो या सद्गंर्थो की भाव भीनी पर पहुँचाना है. निष्कर्ष यह है कि मुमुक्षु या कल्याण कामी को श्रीमद्भागवत की भाव भूमि पर पहुँचाना ही होगा तभी मुक्ति संभव है अन्यथा नहीं.

::

मासिक राशिफल दिसम्बर २००९

मेष-चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,अ,**वृष**-इ,उ,ए,ओ,वा,बी,बू,वे,वो **मिथुन**-का,की,कु,घ,ङ,छ,के,को,ह **कर्क**-ही, हू, हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो **सिंह**-मा,मी,मु,मे,मा,टा,टी,टू,टे **कन्या**-टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो **तुला**-रा,री, रू, रे, रो,ता,ती,तू,ते **वृष्चिक**-तो,ना,नी,नू,ने,नो,मा,मी,यू **धनु**-ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,टा,भे **मकर**-भो,जा,जी,खी, खू,खे,खो,गा,गी **कुम्भ**-गू,गे, गो,सा,सी,सू,से,स,सो,दा **मीन**-दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची.

मेष-व्यवसाय में समस्या, अनावश्यक खर्च, आर्थिक विकास तथा धनागम में बाधा रहेगी.

वृष-पारिवारिक सुख, जीवन साथी का सहयोग, मंगल कार्यो में रूचि अधिक रहेगी.

मिथुन-द्रव्य लाभ, मित्रों का सहयोग, अध्ययन में गहरी रूचि रहेगी, कार्यो में प्रगति होगी.

कर्क-अनावश्यक खर्च व व्यर्थ वाद विवाद, मानसिक परेशानी रहेगी, सत्संग से लाभ मिलेगा.

सिंह-धन लाभ सामान्य, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, जीवन साथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा.

कन्या-सामाजिक प्रतिष्ठा में बृद्धि, अकस्मात धन लाभ सम्भव, स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव

तुला-कार्यो में प्रगति, परिश्रम करन ` से धनालाभ, दाम्पत्य जीवन में तनाव, मानसिक परेशानी रहेगी.

वृश्चिक-साहस व पराक्रम में वृद्धि होगी, यात्रा में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम, धन लाभ होगा।

धनु-व्यापार में रुकावटें, यात्रा में कठिनाई, पारिवारिक जनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा.

मकर-नौकरी व्यवसाय में सफलता, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, व्यय की अधि कता रहेगी.

कुम्भ-शारीरिक व मानसिक कष्ट, सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी, धन व्यय, स्वास्थ्य उत्तम

मीन-कार्य की अधिकता, खर्च में वृद्धि, धनलाभ सामान्य, स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव रहेगा.

पं० संजय कुमार चतुर्वेदी,
लखीमपुर खीरी,उ.प्र.

स्नेह बाल मंच

मेरी मुंबई यात्रा

रेल की यात्रा
दोस्तों का साथ
मुम्बई तट के सफर की
यारो क्या बात

बैठते ही डब्बे में
ट्रेन ने दिया हार्न
हुई जो शरारत शुरु
तो मैडम ने किया वार्न

पार्को की सैर की
और खूब की मौज
महालक्ष्मी मंदिर जा पहुँची
हम बच्चों की फौज

देखा गेट वे ऑफ इण्डिया
साथ ही होटल ताज
सागर की लहरों पर
अठ खेलियॉ करते जहाज

एसेल वर्ड में पहुँचकर
पाई झूलों की बहार
सबका मन ऐसा रमा
कोई बाहर आने को न तैयार

जूहू बीच पर दौड़े सटपट
खाई भेलपूड़ी
बारगेन बाजार से की खरीदारी
दीदी के लिये ली चूड़ी

खूब हुई मौज मस्ती
सहयोगी रहा डी.पी.एस. परिवार
अगले साल कहॉ जायेंगें
यही सोच रहे बार-बार

आयुष गुप्ता, कक्षा-७,
सीओ श्री घनश्याम दास गुप्ता, २००, प्रभु नगर, अंकुर नर्सिग होम मार्ग, भोपाल, ४६२००१, म.प्र.

प्रिय भैया/बहिनों

आप अपनी चहेती पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' मासिक ने अपने नवम वर्ष पूर्ण करने के अवसर पर स्नेह बाल मंच स्तंभ में अब केवल ऐसे भईया बहनों की रचनाएं ही प्रकाशित की जाएगी जिनकी उम्र १५ वर्ष या उससे कम है। इससे अधिक उम्र के भईया/बहन कृपया इस स्तम्भ के लिए रचनाएं न भेजें. १५वर्ष से कम उम्र के भईया/बहनों से इस स्तंम्भ हेतु कविताएं, कहानियां, लेख, चित्र, रोचक जानकारी, कुछ खास जानकारी जिसे आप अन्य भईया बहनों को देना चाहते है अथवा अपने अध यापक/माता-पिता/प्रशासन राज्य व केन्द्र सरकार से कोई शिकायत है तो आप हमें लिख भेजें आपकी शिकायत को हम अवश्य संबंधित व्यक्ति/अधिकारी तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे। जिस व्यक्ति/अधिकारी से संबंधित शिकायत हो उसका नाम पता हमें अपनी रचना के साथ अवश्य लिखें।

इस स्तम्भ में आपका 'मन करता है' अगर कुछ करने को, कहने को मन करता है तो खुलेआम/बेहिचक लिख भेजिए। यह स्तम्भ/ यह पत्रिका आपकी है. हम आपके सुझावों/ शिकायतों का भी स्वागत करते है।

सभी भैया बहिनों को नववर्ष २०१० की हार्दिक बधाई।

परीक्षा के समय नजदीक आ रहे हैं. अब परीक्षा की तैयारी करें। अगर आपको परीक्षा की तैयारी में कोई समस्या आ रही हो तो हमें लिख भेजें।

आपकी बहनः
संस्कृति 'गोकुल'

बच्चों के लिए आवश्यक सूचना

हिन्दी के प्रचार प्रसार व भैया/बहिनों को हिन्दी में ललक जगाने के लिए बाल्य शाखा का गठन किया जा रहा है। इस शाखा के लिए भैया बहिनों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। केवल जवाबी लिफाफा के साथ एक फोटो अपना पूरा नाम, पिता का नाम, पता, मोबाइल संख्या लिखकर निम्न पते पर भेजना होगा.

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

स्नेह युवा मंच

✍शबनम शर्मा, नाहन, हि.प्र. की लघुकथाएं

शान

अंजू अच्छे खासे नामी खानदान की बहू है। वह अपने घर में सबसे बड़ी है, उसकी षादी में उसके माँ-बाप कुछ खास न दे पाए जबकि दोनों देवरानियाँ अच्छा खासा दहेज़ लेकर इस घर में आईं। अंजू हीन भावना से ग्रस्त हो गई। वैसे भी स्वभाव से वह कंजूस प्रवृति की महिला है। पति के पास धन की कोई कमी नहीं है। वह जरा-जरा सी बात के लिये पति से धन बटोरती। सारा साल छोटी-छोटी चीज़ों के लिये तरसती और पैसे जमा करती। बच्चों की छुट्टियाँ आतीं तो बिताने अपने मायके चली जाती। आती बार उसके पास ढेरों सामान होता। कभी-कभी तो भाई गाड़ी में छोड़ने आता। वह मायके का बखान करते न थकती। मेरी माँ ने ये किया वो दिया।

एक दिन मैं उससे पूछ ही बैठी, ''अंजू, षादी पर तो इतना कुछ भी न था, अब तो तुम्हारे पिताजी भी रिटायर है, फिर माँ जी इतना कैसे कर पाती हैं।'' उसने कहा, ''दीदी, सच कहूँ वो नहीं कर पातीं, पर यहाँ वीनू और रेणू की हालत देखी है मायके ने घर भर दिया है इसलिये मैं अपने पैसों से ये सब खरीद कर षान तो बनाती ही हूँ और मीनू के पापा पर रौब भी रखती हूँ।'' मैंने सिर हिला दिया परन्तु इक सोच मुझे कौंधती रही।

मूल्यांकन

अस्पताल के स्पैषल वार्ड में दोनों स्त्रियों के बिस्तर थे। उम्र भी करीब-करीब एक सी ही थी। दोनों ज़िन्दगी के ६ दषक पार कर चुकी थीं, बुढ़ापा तो अपने आप में एक बीमारी है फिर ऊपर से अकेलापन, चिन्ताएँ सब घेरे रखती हैं। मिसेज़ वालिया के दो बेटे हैं एक मुँबई में इंजीनियर है तो दूसरा कनेडा में एक अच्छी नौकरी में है। उसे भारत आए ५-६ बरस बीत गये हैं। हाँ, फोन पर बात ज़रूर हो जाती है। मुंबई वाले बेटे को कंपनी छुट्टी नहीं देती, अभी तक वो भी कभी ही आकर घर की खोज खबर लेता है। दूसरी वष्द्धा मीना इसी षहर की एक महिला हैं किसी पाठषाला से अध्यापिका रिटायर हुई हैं। पिछले हफ्ते वालिया साहब ने अपने दोनों बेटों को माँ की तबीयत के बारे में बता दिया था। दोनों ने माँ को फोन किये, हाल-चाल पूछा। आज वो देख रही थी सामने वाली मीना का बेटा तीनों वक्त गरम खाना, चाय लेकर आता, माँ को मनुहार करके पिलाता, छोटा पोता भी दादी को देखने आता, दादी से लिपटकर प्यार करता, अपने नन्हें-नन्हें हाथों से उसका सिर दबाता, कभी बहु कभी बेटा उनकी टाँगे दबाते, पीठ दबाते, उनके सिर में तेल मालिष करते। मीना की आधी बीमारी अपने बच्चों को देखकर खत्म हो जाती, मिसेज़ वालिया अभी ये सब देख ही रही थी कि वालिया साहब एक रजिस्ट्री हाथ में लेकर आए। मिसेज वालिया ने लिफ़ाफ़ा खोला, एक छोटा सा खत था इसमें, ''माँ अपना ध्यान रखना, मैं चैक भेज रहा हूँ पैसे भर लेना, अपने लिये नौकर, आया रख लेना व पैसे की चिन्ता मत करना।'' मिसेज वालिया ने लिफ़ाफ़े में चैक डाल दिया व मीना को निहारने लगी जिसका बेटा उसके पाँव दबा रहा था और मुस्करा-मुस्करा कर बतिया रहा था.

सुनील गुप्ता 'तनहा', कवर्धा, छ.ग. की कविताएं

लिख दिया

लिख दिया चाँद सी तेरी सूरत पे गीत।
हम सुनाएंगे तुमको बना करके मीत।।
ऐसे चमके हैं माथे की बिंदिया तेरी।
यूँ उड़ाती है रह-रह के निंदिया मेरी।।
हम ना जाने हुई कब, हमें तुमसे प्रीत....
जुल्फें मुखड़े से उलझी हटाना तेरा।
दिल क्यों तुमने चुराया बताना मेरा।।
चुप ना ऐसे रहो तुम, ना बन जाए रीत...
शोख जलवा तेरा, मेरा दीवानापन।
दिल से दिल यूँ मिले, हो गयी यूँ लगन।।
हार तुमसे गया हूँ, हो जाएगी जीत....।।

दास्ताँ सुनाता हूँ.....!

मैं नहीं कहता कि, गीत ग़ज़ल गाता हूँ।
मुझ पर जो गुजरी, वह दास्ताँ सुनाता हूँ।।
फुटपाथों की भीड़ में देखो, मेरा बचपन रौंदाया है।
भूँख में जाने कितनी, रातों की नींद गँवाया है।।
काले-काले अतीत के, वह मंझर तुम्हें दिखाता हूँ...
इंसानो ने नहीं स्वीकारा, मुझको इंसाँ की संतान।
हर नजरों से मिली उपेक्षा, घृणा और अपमान।।
रोटी में दबी जवानी को, ढूंढ नहीं पाता हूँ.....
नीलकंठ की भांति मैने, विष को पीकर जीया है।
अपने जीने की खातिर, फटा हुआ मन सीया है।।
हमदर्दी कैसी, प्यार कैसा, मैं तो तरसा जाता हूँ....
किसने मेरे इस जीवन पर, सितम नहीं ढाया है।
हर किसी ने मेरे ही, दामन में आग लगाया है।।
दर्द में डूब गया हूँ, 'तनहा' फिर भी मैं मुस्काता हूँ....।

हिन्दी

हिन्दी के सम्मान में, रचे अनेको छन्द।
पड़ा न तनिक प्रभाव पर, अफसर है स्वच्छन्द।
अफसर है स्वच्छन्द, इन्हें परवाह नहीं है।
करती इंगलिश राज, न इसकी चाह कहीं है।
संविधान में मान, राष्ट्र की है यदि विन्दी।
सभी तरह सम्पन्न, हमारी भाषा हिन्दी
नेता, मंत्री कह रहे, हिन्दी में हो काम।
पर अफसर लेते नहीं, कभी भूलकर नाम।
कभी भूलकर नाम, चलाते हैं मनमानी।
हिन्दी है असहाय, बनी अंग्रेजी रानी।
साठ बरस से बने हुए, अफसर अभिनेता।
है इनका वर्चस्व, न कुछ कर पाते नेता।
आजादी तो मिल गई, पर हम अभी गुलाम।
अंग्रेजी में हो रहे, सभी हमारे काम।
सभी हमारे काम न हिन्दी है सम्मानित।
जो अपनायें इसे नित्य होते अपमानित
बोल रही है जिसे, बड़ी सबसे आबादी।
कहते उसको हेय, आह्! कैसी आजादी?

सनातन कुमार वाजपेयी, जबलपुर,म.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++

गीत

कैसे सज़ती सेज विरह की, कैसे करती रूदन यामिनी!
यदि पूनम ने कभी अमा को हंसकर नहीं निहारा होता!
कैसे सुस्मृतियों के दीपक,
कभी विरह के घर जल पाते?
राधाओं के संग पल पाते?
कैसे प्यास मिलन की बढ़ती,
क्यों कर रटता पिया पपीहा?
फिर 'घनश्याम' किसी ग्वालिन को,
पनघट पर कैसे छल पाते?
कैसे निज अस्तित्व भुलाकर मीरा बनती मीराबाई?
यदि न प्रेम से विष प्याला पी अपने कंठ उतारा होता!
कैसे फूल बिहँसते वन में,
हँसते कैसे कली दुबारा?
कैसे करते भ्रमर नयन से,
कलि-कुसुमों को स्निग्ध इशारा?
कैसे पुनः सुहागन बनती,
लतिकाएं सज पीत-वसन से?
कैसे युगों-युगों तक धरती,
करतीं अपना रूप निखारा?
कैसे उपवन के अधरों पर लाली अँज पाती दोबारा?
यदि मधुमृत का घर पतझर ने आकर नहीं बुहारा होता!
अपना दर्द जता कर जग को,
की मैंने भारी नादानी!
मेरे ऑसू देख रूकी, कब!
सरिताओं की गति तुफानी!
मेरे पीर मनोगत करके,
कब नभ ने दो अश्रु गिराये!
मेरे आहत स्वर से तापित,
कब पिघला पाषाण हिमानी!
श्रद्धा सुमन चढ़ाता होता आज विश्व का कण-कण मुझको;
यदि मैंने गीतों में अपने जग का दर्द उभारा होता!

ब्रज बिहारी 'ब्रजेश, 'गीतिका', मोहम्मदी खीरी, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++

बालश्रम

मैं खुद प्यासा रहता हूँ पर
जन-जन की प्यास बुझाता हूँ
बालश्रम का मतलब क्या है
समझ नहीं मैं पाता हूँ
भूखी अम्मा, भूखी दादी
भूखा मैं भी रहता हूँ
पानी बेचूँ, प्यास बुझाऊँ
शाम को रोटी खाता हूँ
उनसे तो मैं ही अच्छा हूँ
जो भिक्षा मांगा करते हैं
नहीं गया विद्यालय तो क्या
मेहनत की रोटी खाता हूँ
पढ़-लिख कर बन जाऊँ नेता
झूठे वादे दे लूँ धोखा
अच्छा इससे अनपढ़ रहना
मानव बनना होगा चोखा
मानवता की राह चलूँगा
खुशियों के दीप जलाऊँगा
प्यासा खुद रह जाऊँगा, पर
जन-मन की प्यास बुझाऊँगा

ए.कीर्तिबर्धन, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

साहित्य समाचार

डॉ० तारा सिंह सम्मानित

३० जुलाई ०९ को एम.एस.एम.ई. विकास संस्थान, जयपुर, म राजभाषा किरण संस्थान, मुम्बई द्वारा आयोजित

कार्यक्रम में सुदीर्घ साहित्य सेवा एवं अभूतपूर्व उपलब्धियों के लिए डॉ० तारा सिंह को 'अखिल भारतीय राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार' व राजभाषा साहित्य महोपाध्याय मानद उपाधि से नवाजा गया. इसके पूर्व डॉ० तारा सिंह को भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर द्वारा डॉ० श्रीमती तारा सिंह, मुंबई को उनकी कालजयी कृति एवं प्राणद साहित्य सर्जना के लिए 'साहित्य महामहोपाध्याय' मानदोपाधि द्वारा अलंकृत किया गया. समारोह की अध्यक्षता डॉ० जिया लाल आर्य, भू. पू.गृहसचिव, बिहार, मुख्य अतिथि साहित्य मर्मज्ञ डॉ० केदार नाथ सिंह के हाथों श्रीमती सिंह को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिहन प्रदान किया गया.

डॉ०द्विवेदी को प्रज्ञा भारती सम्मान

२५ वें राष्ट्रीय भाषायी एकता अधिवेशन, परियॉवा, प्रतापगढ़ में विश्व स्नेह समाज के सम्पादक व विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को समाज सेवा/शिक्षा/साहित्य/संस्कृति एवं अध्यात्म क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रज्ञा भारती सम्मान से अलंकृत किया गया. इस अवसर पर संस्था के प्रबधक शिवेन्द्र त्रिपाठी, वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश', रवि कान्त खरे बाबाजी, न्यायमूर्ति सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, न्यायमूर्ति रामचन्द्र शुक्ल, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, संगीता श्रीवास्तव, डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय, हितेश कुमार शर्मा, राम सहाय बरैया, महेन्द्र पाण्डेय आदि उपस्थित थे.

गोकुलेश्वर द्विवेदी जिलाध्यक्ष मनोनित

अखिल भारतीय पत्रकारिता संगठन, पानीपत, हरियाणा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीजेन्द्र कुमार जेमिनी ने पत्रिका के संपादक डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को इलाहाबाद जिले का जिलाध्यक्ष मनोनित किया है.

हितेश शर्मा को दुष्यंत कुमार सम्मान

बिजनौर के वरिष्ठ साहित्कार डॉ० हितेश कुमार शर्मा को सतत लेखन एवं सम्पूर्ण कृतित्व एवं बहुमूल्य साहित्यिक सेवाओं के लिए ग्वालियर साहित्य एवं कला परिषद, ग्वालियर, म.प्र. द्वारा दुष्यंत कुमार सम्मान प्रदान किया गया.

शबनम ज्योति का लोकार्पण

शबनम साहित्य परिषद की पत्रिका शबनम ज्योति का लोकार्पण महेश गहलोत के हाथों किया गया. कार्यक्रम में बाबू खां मेहर, इकबाल कम्पाउडर, श्याम गहलोत, फकीर मो. पठान, कैलाश गहलोत, गयूर कुरेशी, हरीश भाई, अब्दुल गनी ताजक, जब्बार शेख, अनवर पठान, इसाक शेख, मोतीराम लोहिया,आदि उपस्थित थे.

कविता का भविष्य और भविष्य की कविता' विषयक व्याख्यान माला आयोजित

रायबरेली. फिरोज गांधी कॉलेज के हिन्दी विभाग की ओर से डॉ० लालता प्रसाद दूबे स्मृति व्याख्यान माला का आयोजन किया गया. व्याख्यान माला का विषय था कविता का भविष्य और भविष्य की कविता' इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि कमला नेहरू पी.जी.कॉलेज, तेज गांव पूर्व प्रचार्य डॉ० शिव बहादुर सिंह भदौरिया ने कहा कि कविता जीने की जरुरत है. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. आर.एस. राय ने की. फिरोज गांधी कॉलेज की हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. चम्पा श्रीवास्तव ने कहा कि डॉ. भदौरिया ने गीत विधा को अन्तराष्ट्रीय आयाम दिये है. कोई भी रचनाकार परिवेश की उपेक्षा कर सृजन नहीं कर सकता. डॉ० किरन श्रीवास्तव ने कहा कि विसंगतियां कविता की निगाह से बच नहीं सकती. डॉ. सतोंष ने कहा कि शब्दों एवं वर्णो की रगड़ से कविता का जन्म होता है. धन्यवाद ज्ञापन डॉ. बद्री दत्त मिश्रा ने किया. इस अवसर पर डॉ. सरोज कुमारी, डॉ. स्नेहलता, डॉ. वैशाली, शंभु शरण द्विवेदी, पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', डॉ. आर.बी.श्रीवास्तव, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. संत लाल आदि उपस्थित रहे.

राजीव गांधी समरसता अवार्ड

२० अगस्त ०८ को पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के ६६वें जन्म दिन के शुभ अवसर पर नई दिल्ली के

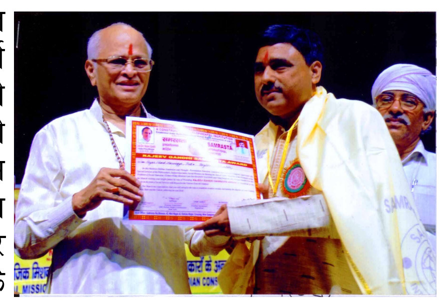

आन्ध्रा भवन में समरसता इन्टरनेशनल कांग्रेस द्वारा आयोजित समारोह में पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री जी. वी.जी.कृष्णमूर्ति के कर कमलों द्वारा 'राजीव गांधी समरसता अवार्ड' से अलंकृत किया गया.

खेल की दुनिया

हॉकी

हॉकी खेल के कुछ महत्वपूर्ण तथ्य निम्नलिखित है:-खेल की अवधि:-हॉकी खेल में दो टीमों के बीच मुकाबला होता है। प्रत्येक टीम में ११ खिलाड़ी होते हैं। खेल की अवधि ७५ मिनट की होती है। जिसमें ५ मिनट का मध्यान्तर होता है।

हॉकी की बाल:-हॉकी की बाल सफेद रंग की होती है, इसका वजन १५६ ग्राम से लेकर १६३ ग्राम तक होता है। बाल की परिधि २२.४ सेमी० से २३.५ सेमी० तक होती है।

हॉकी का भार:-खेल में प्रयुक्त होने वाली हॉकी का भार २८ औंस और २३ औंस होता है।

खिलाड़ियों की खेल के मैदान में स्थिति:-हॉकी खेल में गोली, राइट बैक, लेवर बैक, आउट-साइड राइट, इन-साइड सेण्टर, सेण्टर फारवर्ड, इनसाइड लेफ्ट, आउट साइड लेफ्ट, सेण्टर हॉफ, सेण्टर लाइन तथा कार्नर खिलाड़ियों की स्थिति होती है।

हॉकी की शब्दावली:-हॉकी में पेनाल्टी स्ट्रोक, क्लिक, रिवर्स क्लिक, स्कूप, स्टिक, अम्पायर, लाइन्स मैन, हॉफबाली, इनफ्रिजमेंण्ट, साइड लाइन, टाई ब्रेकर, सडेनडथ, हैट्रिक, अण्डर कटिग, सर्किल, वुली, रोल ऑन, पुशइन, शूटिंग सर्किल आदि का महत्वपूर्ण स्थान है।

बुली:-हॉकी के खेल के प्रारम्भ के समय बाल को स्टिक से मारना "बुली" कहलाता है।

फ्री हिट:-जब विपक्षी टीम गेंद को स्वतंन्त्रता से मारती है उसे "फ्रीहिट" कहते है।

पेनाल्टी कार्नर/स्ट्रोक:-पेनाल्टी कार्नर तथा पेनाल्टी स्ट्रोक, गोल करने के आसान अवसर है।

फाउल:-स्टिक को कन्धे से ऊपर उठाना, गलत ढंग से शॉट लगाना, विपक्षी खिलाड़ी के खेल में बाधा डालना आदि "फाउल" माना जाता है।

अम्पायर:-खेल का संचालन दो "अम्पायर" करते हैं जिसका निर्णय दोनो टीमों को मानना पड़ता है। खेल में जो टीम अधिक गोल करती है, वही विजेता घोषित की जाती है।

हॉकी खेल के नियम

हॉकी खेल के प्रमुख नियम निम्नलिखित है:-

१-खेल के दौरान कोई भी टीम तीन से अधिक खिलाड़ी नहीं बदल सकती है।

२- एक बार बदला गया खिलाड़ी फिर से मैच में भाग नहीं ले सकता है।

३-यदि हॉकी की बाल गोल कीपर के क्षेत्र में हो, तो वह इसे किक मार सकता है या अपने शरीर के किसी भी भाग से बाल को रोक सकता है।

४-अपनी टीम के लाभ के लिए कोई खिलाड़ी बाल को जमीन या हवा में अपने शरीर से नहीं रोक सकता है।

५-हॉकी के अलावा किसी भी रुप या दशा में बाल को लुढकाया या फेंका नहीं जा सकता है।

६-जब अम्पायर को ऐसा लगे कि रक्षात्मक खिलाड़ी ने जान बूझकर बाल गोल पोस्ट के अतिरिक्त गोल रेखा में डाल दी है, तो गोल न होने की दशा में विपक्षी टीम को पेनाल्टी कार्नर देगा।

७-पेनाल्टी स्ट्रोक आक्रामक टीम को उस दशा में दिया जाता है जब रक्षात्मक टीम का खिलाड़ी "डी" (अर्द्धवृत्त) के अन्दर से जान बुझकर गलती करता है या अनजाने में उससे बाल रुक जाती है।

८-पेनाल्टी स्ट्रोक आक्रामक टीम का कोई भी खिलाड़ी ६.४० मीटर की दूरी से मार सकता है, जिसे केवल रक्षक टीम का गोल कीपर ही रोक सकता है।

९-पेनाल्टी स्ट्रोक की बाल यदि कन्धे से ऊंची है तो गोल कीपर उसे स्टिक से रोक सकता है।

१०-यदि बाल "डी" (अर्द्धवृत्त) के अन्दर स्थिर हो जाए या बाहर चली, जाये तो पेनाल्टी स्ट्रोक समाप्त हो जाता है।

११-यदि पेनाल्टी के समय गोल कीपर द्वारा हॉकी नियमों का उल्लंघन करने पर बाल रुक भी जाए, तो भी गोल हुआ मान लिया जाता है।

१२-हॉकी खेल में तीन कार्डो का प्रयोग होता है।

हरा कार्ड-मिलने पर खिलाड़ी को चेतावनी दी जाती है।

पीला कार्ड- मिलने पर खिलाड़ी ५ मिनट के लिये खेल से बाहर कर दिया जाता है।

लाल कार्ड- मिलने पर खिलाड़ी पूरे समय के लिये खेल से निकाल दिया जाता है।

प्रमुख प्रतियोगितायें:-ओलम्पिक हॉकी, एशियाई हॉकी, विश्व कप (पुरूष/महिला), एशिया कप, बेटन कप, लेडी रतन टाटा कप (महिला), महाराजा रंजीत सिंह गोल्ड कप, एम०सी०सी० कप, रंगा स्वामी कप, इंदिरा गोल्ड कप, आगा खॉ कप, अजलन शाह कप, विलिंगटन काप, मुरूगप्पा गोल्ड कप, ध्यानचन्द्र ट्राफी

प्रमुख खिलाड़ी:

भारत:-मेजर ध्यानचन्द्र, धनराज पिल्लै, मुकेश कुमार, बलजीत सिंह ढिल्लो, परगट सिंह, अशोक कुमार, राजीव नाकर, मधु यादव, जफर इकबाल, मोहम्मद शाहिद,

पाकिस्तान:-शाहबाज अहमद, ताहिर जमा, मसदिक हुसैन,

जर्मनी: वाकर फ्रीड, एण्ड्रीज बेकर, माइकल हिटगिर्स।

हालैण्ड:-मार्क डेलीसन, वानग्रिम बरध ान, क्लोरिश बाबलैण्ड,

आस्ट्रेलिया:-केन वार्क, वारेन विर्गघिम जेस्टेसी आदि।

आपने कुछ कहा

पत्रिका साहित्य सेवा में सलंग्न है.

बन्धुवर द्विवेदी जी, सप्रेम अभिवादन

साहित्यकारों के लिए संघर्ष हेतु विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान कार्यरत है. यह अपने आप में एक बड़ा कार्य है. ईश्वर इस कार्य को अवश्य प्रगतिगामी होने की अनुकम्पा प्रदान करेंगा. आपकी पत्रिका भी साहित्य सेवा में सलंग्न है. आज नवोदित साहित्यकारों को जगह मिल जाए यह बहुत बड़ी बात है क्योंकि बाजारवाद का दंश हर क्षेत्र में व्याप्त हो गया है. इसीलिए आज साहित्य या तो बाजारी होता जा रहा है या वह गायब हो रहा है.

डॉ. वेद 'व्यथित', अध्यक्ष, भारतीय साहित्यकार संघ, अनुकम्पा १५७७, से.३, फरीदाबाद-१२१००४

++++++++++++++++++++++++++++++++++

सुन्दर सम्पादन के लिए बधाई.

प्रेषित पत्रिका मिली धन्यवाद. पत्रिका अच्छी है प्रिटिंग साफ सूथरी है किन्तु फोटो साफ नहीं आए है कृपया इस ओर भी ध्यान दें. इलाहाबाद के बारे में विस्तृत जानकारी पढ़कर ऐसा लगा मैं स्वयं इलाहाबाद पहुंच गया हूँ. आपने बहत सटिक जानकारी दी है. कहानी, लघुकथा, ग़ज़ल, कविताएं, हाइकु भी अच्छे लगे. कुल मिलाकर पत्रिका पठनीय थी. सुन्दर सम्पादन के लिए बधाई.

कुन्दन पाटिल, १२६, नयापुरा, मराठा समाज, देवास, म.प्र.४५५००१

++++++++++++++++++++++++++++++++++

पत्रिका को गरिमा प्रदान करते हैं

पत्रिका पढ़कर सुखद अनुभूति हुई. समसामयिक सन्दर्भो से जुड़ी यर्थाथपरक रचनात्मक सामग्री को पढ़कर अच्छा लगा. सामाजिक सरोकारों से जुड़ी ज्ञानवर्धक सामग्री एवं साहित्यिक समाचार पत्रिका को गरिमा प्रदान करते हैं. आपके कुशल सम्पादन में पत्रिका निरन्तर विकास की ओर अग्रसर रहेगी, ऐसी आशा है. पत्रिका के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ.

राजेन्द्र बहादुर सिंह 'राजन', ग्राम-फत्तेपुर, पो. बेनीकामा, रायबरेली, उ.प्र. २२६४०२

++++++++++++++++++++++++++++++++++

आपके उत्कृष्ट संपादकीय के लिए साधुवाद.

पत्रिका के दो अंक मिले. अंक साधारण एवं सरल होते हुए भी आकर्षक एवम् पठनीय है. पत्रिका का विशेष आकर्षक था-संपादकीय. समयानुकूल, तथ्य परक, विषय, जो सोचने पर मजबूर करते हैं-हम क्या थे? क्या कर रहे हैं? अपहरण एक व्यवसाय हो गया है. इससे लोग अपनी रोजी-रोटी चला रहे है. इसमें मात्र अशिक्षित बेरोजगार आदि ही नहीं वरन् सभ्य वर्ग भी सम्मिलित है. फिर हमारी शिक्षा नीति, नीति निर्धारकों की नीयत सभी मिलकर सोने पे सुहागा किये हैं. आपके उत्कृष्ट संपादकीय, भागीरथ प्रयास के लिए साधुवाद.

रितेन्द्र अग्रवाल, ११/५००, मालवीय नगर, जयपुर, -१७

++++++++++++++++++++++++++++++++++

परम आदरणीय द्विवेदीजी

सादर प्रणाम्. आपकी पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' प्राप्त हुई. मेरी अपनी ओर से तथा हमारे हिंदी विभाग की ओर से हार्दिक बधाईयां. हिन्दी के प्रचार प्रसार में तथा सौहार्द, भाईचारा आदि की स्थापना करने में आपकी पत्रिका बेहद उपयोगी हैं. अहिंदी भाषी हम केरलियों के लिए पत्रिकाएं विरले ही मिलती है. केरल में हिंदी का स्वागत करने वाली जनता हैं, शांतिप्रिय जनता भी है. यह हर्ष की बात है कि हिंदी के माध्यम से आप जैसे विद्वानों के संपर्क में आने का अवसर मिला है.

डॉ.जार्जकुट्टी वटोत्त, रीडर हिंदी, सेंट थामस कॉलेज, पाला, कोटटायम, केरला

++++++++++++++++++++++++++++++++++

आपका प्रयास अभिनन्दनीय है.

श्रीमान संपादकजी, महोदय

विश्व स्नेह समाज का अगस्त-०६ का अंक मिला. समग्र साम्रगी श्रेष्ठ व पठनीय लगी. आपके चयन की प्रक्रिया को नमन':दूरदर्शन अथवा धूर्तदर्शन' आलेख समसामयिक व पूर्ण प्रभावी रहा. आपका प्रयास अभिनन्दनीय है.

पंडित ओम प्रकाश शर्मा भारद्वाज

मानस मराल, २०६८, राजमोहल्ला, महू छावनी, महू-४५३४४१, इन्दौर, म.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

राजा ही जब चोर सिपाही क्या करेगा.

मान० द्विवेदी जी,सादराभिवादन

अगस्त ०६ अंक मिला. संपादकीय में आपने सच कहा है कि भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी ऊपर से नीचे तक व्याप्त है. यदि ऊपर वाले सुधर जायें तो नीचे वाले आपही सुधर जायेंगें लेकिन वही बात कि 'राजा ही जब चोर सिपाही क्या करेगा.

अजय चतुर्वेदी'कक्का', बीजपुर, सोनभद्र-२३१२२३,उ.प्र.

आवश्यक सूचना

पत्रिका के बारे में आपके खुले विचारो को स्वागत है. इस स्तम्भ में आप आप पत्रिका के बारें में क्या अच्छा लगा, क्या कमियां हैं, क्या नये स्तम्भ और डाले जाए आदि.

संपादक

लघु कथाएं

उजियारा

✍प्रो० शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

उसको अपनी मां से बहुत लगाव था. लगाव हो भी क्यों न, क्योंकि पिता की असमय मौत के बाद मां ने ही मां के साथ पिता बनकर उसकी सारी जिम्मेदारियां पूरी क उसे पढ़ा-लिखाकर अधिकारी के पद तक पहुंचाया था. पर शादी के बाद उसकी पत्नी व मां में बिल्कुल भी न बनी. वह दो पाटों के बीच पिसने लगा. मां व पत्नी में, शायद उस पर एकाधिकार को लेकर कोई ग्रंथि थी. रोज की चख-चख व अशांति ने उसे परेशान कर दिया. फलस्वरुप और कोई रास्ता न देख वह मां को वृद्धाश्रम छोड़ आया. पर आज दीवाली के दिन उसका मन सुबह से ही अशांत था. उसे इस घर की सच्ची 'लक्ष्मी' मां की याद आ रही थी, क्योंकि यह बात उसका मन अच्छी तरह से जानता था कि किस तरह से इस घर का तन-मन-धन से मां ने निर्माण किया है और घर के हर कोने तक दीये का प्रकाश पहुंचाया है. और वही मां आज इस घर से दूर वृद्धाश्रम में पड़ी है.

यह सब सोचकर उसका मन आर्द्र हो उठा. सांझ घिर आई थी, लोग दीपक उजारने लगे थे, परिवेश का अंधकार मिटने लगा था. अंततः अंतर्द्वन्द पर विजय पाकर वह एक निष्कर्ष पर पहुंच गया. उसने स्कूटर निकाला और और वृद्धाश्रम की ओर चल दिया, मां को हमेशा के लिए लाने को. उसे लगा कि उसके अंतर्मन का अंधकार एकदम से मिट गया है, और वहां भी एक दीपक जल चुका है. अब उसे चारो ओर उजियारा ही उजियारा दिखाई दे रहा था.

संवेदना

✍ आचार्य भगवान देव 'चैतन्य, मण्डी, हि.प्र.

मेहता साहब की पत्नी प्रातःकाल भ्रमण कर रही थी कि अचानक एक गाय ने उसे अपने तीखे सींगों से न केवल घायल किया बल्कि धरती पर गिराकर अपने खुरों से बहुत देर तक मसलती भी रही. यदि भ्रमण करते हुए एक व्यक्ति ने उसे न बचाया होता तो संभवतः उसकी मौत ही हो जाती. अवारा पशुओं के कारण कालोनी में अनेक दुर्घनाएं होती रहती थी. यहां तक कि मोटरसाईकिलों या कारों के आगे पशुओं के अचानक आ जाने से भी बहुत सी दुर्घटनाएं हो चुकी थी. एक बार एक मतवाले साण्ड ने पूरी कालोनी में आतंक मचा दिया था. आज लोगों की यह वृत्ति हो गई है कि जब-तक पशु अपने उपयोग का है तब तक उसका दोहन करो और फिर उसे अवारा छोड़ दो. युग बदला है. अतः पशुओ को ही नहीं आजकल अनुपयोगी हुए मां-बाप तक को उनकी सन्तानें घर से बाहर का मार्ग दिखा देती है. एक समय था जब वृद्ध मां-बाप की सेवा करना परम-धर्म माना जाता था. व्यक्ति संवेदनशीलता से भरे हुए होते थे. पशुओं के बीमार होने पर उनकी सेवा में पूरा परिवार जुट जाता था. अनुपयोगी या बूढ़े हुए पशुओ की सेवा करना अपना दायित्व एवं धर्म समझते थे. मुझे अपने बचपन की घटना आज भी स्मरण है. हमारे दो बैल थे-सोहणियां और हरनू. पूरे परिवार को वे अतिप्रिय थे. सोहणियां उग्र स्वभाव का था, मगर हरनू सन्तों जैसा वितराग. अपनी पूरी आयु वे हमारे खेतों का काम करते रहे. कालान्तर में जब वे बूढ़े हो गए और सुन्दरनगर की नलवा से नए बैलों की जोड़ी लाने की बात चली तो दूसरे गांव से आए एक व्यक्ति ने आंगन के छोर पर बन्धे हमारे बैलों की ओर संकेत करते हुए अपना सुझाव दिया-इन बूढ़े बैलो को किसी को बेच दो. कुछ तो पैसे मिल ही जाएंगें, या. उसकी बात पूरी होने से पूर्व ही मेरी मां ने एकदम अप्रत्याशित आवेश में आकर उस व्यक्ति को डांटते हुए कहा, 'तुम्हारी ऐसी बात कहने की हिम्मत कैसे हुई? यदि दुबारा ऐसी बात कही तो जुबान खींच लूंगी, तुम्हारी. ये हमारे जिगर के टुकड़े हैं. इन्हें हम कैसे बेच सकते है. इन्होंने ठिठुरती सर्दी, तपती गर्मी और बरसात की तेज बौछारों व कीचड़ में अपना हाडड-मांस गलाकर मेरे परिवार को पाला है.....हम इनके ऋणी है......हम इनकी सेवा करेंगें......अपने खूण्डे पर पालेंगें इन्हें.... कहते-कहते मां का गला भर गया. अपने आंसू पोछते हुए वह सोहणियां और हरनू के पास जाकर, उनके गले लगकर अपने स्नेहिल हाथों से उन्हें सहलाने लगी. उन दोनों की आंखों में भी नमी आ गई लगती थी...

शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य

जगन की कनिया

कहानी संग्रह

लेखकः

दुर्गा प्रसाद उपाध्याय 'मगन मनीजी'

मूल्यः १०१/रुपये मात्र साजिल्दः १५१

प्रकाशकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद,

पुस्तक समीक्षा

हरियाणा के प्रमुख साहित्यकार

भारत में प्रतिवर्ष, प्रतिमाह.... कितनी पुस्तकें प्रकाशित होती है? इनके उत्तर में कुछ कहना तो दूर अनुमान तक लगाना आसान नहीं है. लेकिन इनमें कुछ ऐसी होती है जिनमें वर्षो की साधाना होती है, जिन पर न केवल लेखक बल्कि, पाठकों, प्रकाशकों को भी नाज होता है. हाल ही में प्रकाशित 'हरियाणा के प्रमुख साहित्यकार' एक ऐसा महाग्रन्थ है जिसके पीछे एक दशक से अधिक अवधि की साधना है, जिसके संपादक है कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. लाल चन्द गुप्त 'मंगल', और जिसकी कुल पृष्ठ संख्या है केवल ७२४. जिसमें हरियाणा के ६१ साहित्यकारों पर ५२ परिचायक रचनाकारों द्वारा आलेख निहित है, पहला आलेख महाकवि सूरदास (१४७४ई) पर है और आखिरी अंजु दुआ जैमिनी पर, जिनका जन्म ४ जून १६६६ को सोनीपत नगर के एक कुलीन वर्गीय परिवार में हुआ था. सभी आलेख ऐसे रचनाकारों द्वारा कलमबद्ध किए गए हैं जो साहित्यकारों के व्यक्तित्व-कृतित्व से भंली-भांति परिचित है. इनमें सोलह आलोख तो स्वयं डॉ. मंगल ही के है, १० डॉ. उषालाल एवं ६ डॉ. सुभाष रस्तोगी समान सुपरिचित समीक्षकों के.

इस महाग्रन्थ के ६२ साहित्यकार जीवित है. डॉ. मंगल समेत ७१ साहित्यकार १५ अगस्त १६४७ से पूर्व जन्में है, जिनमें सात महिलाये हैं. आजादी के बाद जन्में २० साहित्यकारों ३ महिलाएं भी है. सभी साहित्यकारों की पृष्ठभूमि, कार्यक्षेत्र भिन्न है. अधिकांश शिक्षक घराने के हैं. कुछेक सरकारी एवं गैरसरकारी है और अपवाद स्वरुप, गिनती के पूर्णतया स्वतंत्र भी है जो व्यवस्था के खूंटे से नहीं बंधे है. कुछेक व्यवस्था से जुड़ने के बावजूद भी स्वतंत्र रहे हैं. प्रत्येक आलेख तथ्यों तर्को से परिपूर्ण है और प्रमाणिक भी कम नहीं है.

इस अलौकिक ग्रन्थ में अनुभवी संपादक ने ११ पृष्ठीय भूमिका में सभी साहित्यकारों का अति संक्षिप्त, सांकेतिक भाषा में, परिचय दिया है. मात्र बानगी के तौर पर 'कानून का कबीर और 'अज्ञेय का पट्ठा (कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर) तथा 'वकील होते हुए भी इन्साफ की चिन्ता' करने वाले विधि श्री पवन चौधरी 'मनमौजी' हिन्दुस्तान की कानून कचहरी पर, हिन्दी माध्यम से, विविध विधाओं के साहित्यिक फल-फूल उगाने वाला पहला हिन्दुस्तानी है.' जो संपादक के गहन अध्ययन अनुभव एवं सुंदरतम सूक्षमतम चिंतन-मनन पर्याप्त से अधिक साक्ष्य है.

६१ साहित्यकारों पर आलेख ७०० पृष्ठों में निहित है. सभी आलेखों की पृष्ठ संख्या चार और १० के मध्य है. संयोगवश या अपवाद स्वरुप, केवल संपादक महोदय पर आलेख १४ पृष्ठों का है जो डॉ. सुभाष रस्तोगी ने लिखा है. संपादन विषयवस्तु तथा भाषा दोनों का मर्यादित सौंदर्य छटा पढ़ते ही बनती है. संपादक के शब्दों में-'प्रत्येक आलेख में आपको मेरी घुसपैठ अवश्य दिखायी देगी, क्योंकि मैंने प्राप्त सामग्री को अपने मनोनुकूल काट-छांट, ठोक-पीट, संयोजन-समायोजन और सुगठन-संगुफन में अपनी संपादकीय कर्त्तव्य परायणता और दायित्वशीलता का कठोरता पूर्वक निर्वाह किया है. जो कुछ कहा गया है, सच-सच कहा गया है, और सच के सिवाय कुछ नहीं कहा गया है.'

डॉ० मंगल ने दो अन्य अति महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर भी ताल ठोक कर दिए है. हरियाणावी साहित्यकार कौन?

समीक्षकःविधिश्री पवन चौधरी 'मनमौजी' नई दिल्ली

प्रश्न के उत्तर में उनका मानना है कि 'जन्मना, कर्मणा तो हरियाणावी है ही, वह रचनाकार भी है जो बीसियों-तीसियों साल पहले दूसरे प्रदेशों से आकर हरियाणा में स्थायी रुप से बस गये हैं. वह व्यक्ति भी हरियाणवी हैं, जिसने बीस-तीस वर्षो तक हरियाणा में रहकर साहित्य सृजन किया है और आजकल अन्यत्र जा बसे हैं.

इसी प्रकार प्रमुख हिन्दी साहित्यकार कौन? 'मेरे लिए प्रमुख साहित्यकार कौन? के उत्तर में भी उनका दृष्टिकोण सुस्पष्ट हैं:'मेरे लिए प्रमुख साहित्यकाार वही है, जो सचमुच प्रमुख हैं, जिसके पर्यायवाची है-मूर्द्धन्य, महत्वपूर्ण श्रेष्ठ, विशिष्ट, आदर्श, प्रसिद्ध, चुनिन्दा, अग्रगण्य, उल्लेखनीय, रेखांकनीय, गौरवशाली, सौरभशाली'

निष्कर्षतः हरियाणा के हिन्दी शोधा-साधक परिश्रमी-पराक्रमी डॉ. मंगल ने प्रस्तुत महाग्रन्थ के रूप में लम्बी अथक-अर्थपूर्ण साधना की सफलता के सुअवसर पर हिन्दी साहित्य के प्रेमियों को जितनी प्रशंसा की जाए कम है. विश्वास है, किन केवल हरियाणा, बल्कि हिन्दुस्तान के समस्त हिन्दी जगत में इसका जोरदार स्वागत अभिनन्दन होगा, और इसके अभिनंदन में जगह-जगह जश्न मनाएं जाएंगे. इसको उसी सदभावना से स्वीकार किया जाएगा, जिसके द्वारा यह भेंट किया गया है. अन्य राज्य हिन्दी अकादमियां भी उस पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रयत्न अवश्य करेंगी, जिसका निर्माण इस ग्रन्थ ने किया है.

लेखकः डॉ. लाल चन्द्र गुप्त

प्रकाशक-आई.बी.पब्लिकेशन्स, अम्बाला कैन्ट, १३३००१,

पृष्ठ-७२४, **मूल्यः** ४००/रुपये

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः प्रेम-पीयूष
रचनाकारःडॉ० सन्त कुमार टण्डन 'रसिक'
कीमतः७५ रुपये
समीक्षकः श्रीमती रश्मि 'आलोक'
प्रकाशकः राष्ट्रीय राजभाषा पीठ, ३८६/१६५, हिम्मतगंज, इलाहाबाद-२११०१६

इस आपाधापी भरे जीवन में नागफनी बहुत हे, कटुता है, कसैलापन है, विवाद है, विरोध है, घात और प्रतिघात हैं, नीचता है, धूर्तता है, मूल्यहीनता और संस्कारहीनता है. कहां मिलता हे सम्बंधो का टटकापन, कहां खो गई है मुस्कानें, कहां हे संवाद, कहां है सच्चा प्रेम? रेगिस्तान में पानी के समान मनुष्य अपनों में खोजता है अपनापन. ऐसे महौल में साहित्यकार भी भोगा हुआ लिख रहा है. कल्पना की शक्ति वह कहां से लाए.

ऐसे वातावरण में भी है कुछ लोग ऐसे है जिन्होंने मधु और मधुरता का दामन नहीं छोड़ा है. डॉ.संत कुमार टण्डन 'रसिक' की रचनाएं ताप में शीतलता प्रदान करती हैं. निराशा में भी जीने का मार्ग प्रशस्त करती हैं. 'प्रेम पीयूष' में रसिक के दोहे समर्पण, गागर में सागर के सदृश हैं. इनमें प्यार एवं अध्यात्म हैं. प्रेम के विभिन्न रुप, विभिन्न परिभाषाएं इन दोहों से निकाली जा सकती हैं. पुस्तक के प्रारम्भ में विशिष्ट अभिमत प्रेरणा सारवान की कलम से हैं. अभिमत की कुछ पंक्तियां-'प्रेम अपरिभाषित हे. यह अमूर्त व मूर्त भी है. प्रेम के अनुभव बिना कोई अनुभव सम्भव नही हैं. प्रेम से ही 'स्व' तथा 'पर' की पहचान है. लालसा, चाहत, पसंद, मित्रता, प्रेम के ही पर्याय है.' वहीं दूसरी ओर रसिक जी अपनी स्वीकारोक्ति में कहते हैं-'यह प्रेम पीयूष तुम्हें ही समर्पित है. मैंने तुम्हें हजारों सम्बोधन दिए हैं. फिर एक शब्द सम्बोधन में कैसे बॉधू?', 'हमारे यहां पारकीया प्रेम को भी बहुत ऊँचा माना गया है. तभी तो कृष्ण के साथ राधा की पूजा होती है. चलो, तुम्हें 'राधा' नाम की सर्वोपरि दे देता हूँ और यह प्रेम ग्रंथ तुम्हें समर्पित है. ' यह रसिक जी का ईमानदारी से परिपूर्ण वक्तव्य है. निश्चित रुप से हर दोहा राधा को समर्पित लगता है. कवि ने नये और अनुपम प्रयोग किए है. 'फूलों ने तुमसे किया, यह सुखकर अनुबंध. सुन्दरता तुमसे लिया, दे दी स्वयं सुगंध. संयम पिघला मोम सा, प्रेम पर्वताकार. छुअन आपकी एक थी, सौ-सौ थे त्योहार.' कवि ने महाकाव्य की खोज की, परंतु कहां? 'महाकाव्य तन आपका, अंग-अंग अध्याय. रसिक भंगिमाएं लगी, अलंकार समुदाय. सामान्यतः कवि चांद सितारों से प्रियतमा की तुलना करते हैं, परन्तु कवि क्या कहता है, 'शशि ने तुमसे ले लिया, मांगा रुप उधार. जगमग-जगमग हो गया, यह सारा संसार.

पुराने विश्वासों को भी प्रतीकात्मक ढंग से कवि ने कहने का प्रयास किया है, 'हिचकी आती है इधर, जब तुम करती याद. सुन ली मैंने आपकी, बिना कहे फरियाद।। एक नदी आगे गई, छूती मेरे गांव. ठिठकी थी कुछ देर को, देख हमारा ठांव.

आलोचक और समीक्षक इस लघु ग्रंथ को किसी भी श्रेणी में रखें परनतु रसिक पाठक तो रसिक जी का ही नाम लेंगें.

+++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः आस्था के अंकुर

रचनाकारः बंशीराम शर्मा
सम्पर्कः ३७८/७, प्रतापनगर, गुड़गांव
मूल्यः ५० रुपये मात्र

बंशीराम शर्मा काव्य जगत में अपना एक अलग स्थान रखते हैं. इनकी रचनाएं अक्सर देश की पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिल ही जाती है. प्रस्तुत काव्य संग्रह 'आस्था के अंकुर' में कुल ४८ रचनाएं संग्रहित है. सुकीर्ति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित काव्य संग्रह समझौत शीर्षक अन्तर्गत रचना में-
त्रस्त है हम व्यस्त फिर भी/घिरे हुए असमंजस में घर के अन्धेरे जंगल में/जहां बसती है यादें-असफलताओं की, कटोचती हैं स्मृतियां अभाव के दिनों की।

आज के मानव की दिल की हकीकत को बयां करती हे. संबधो की आड़ लेकर हो रहे अत्याचार/अनाचार को रेखांकित करते हुए श्री शर्मा कहते है-
जब सम्बन्धों की आड़ में/होता है खून-स्वत्व का/अपनत्व का/ तब खून बिगड़ कर पानी हो जाता है।

++++++++++++++++++++++++++++++++++

रंगीनियों में खोया हुआ सा शहर/कि जिसमें अजनबी से लोग/ कंधो से कंधा रगड़कर/फिसलते जा रहे हैं,

++++++++++++++++++++++++++++++++++

अवशा-सा दिन/भिक्षुक-सी रात/ बंधे हैं समय की दासता से/ अस्तित्व, गति कुछ नहीं अपना/ फिर लोग क्यों कहते हैं/ दिन उजला है, रात काली है।

+++++++++++++++++++++++++++++++++++

खुशी, वेदना से नीत चेहरे/ अतीत से भयभीत चेहरे/ हारे-थके उद्भ्रान्त चेहरे/परिश्रम से लदे, ये क्लांत चेहरे/ गोलाईयों में घंस गई-सी/ उन्नींदी आंखो में दहकते/अंगार चेहरे।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत काव्य संग्रह पठनीय है. सभी रचनाएं वर्तमान परिवेश को परिभाषित करती हुई लिखी गई है. रचनाकार को बधाई।

पुस्तक का नामः पूजाग्नि

रचनाकारः बृजेन्द्र अग्निहोत्री

सम्पर्कः जिला कारागार के पीछे, मनोहर नगर, फतेहपुर, उ.प्र. २१२६०१

मूल्यः ६५/- रुपये मात्र

युवा साहित्यकार बृजेन्द्र अग्निहोत्री का यह दूसरा काव्य संग्रह हैं. रचनाकार की सबसे बड़ी उपलब्धि तो यही है कि २५ वर्ष की उम्र के अंदर दो किताबें प्रकाशित होना. प्रस्तुत संग्रह में कुल ६८ रचनाएं हैं. लेकिन दोषी कौन, दिखावा, जनतंत्र, इंसान, पांच साल बाद ज्वलंत मुद्दो पर लिखी गई अच्छी रचनाएं लगी. संग्रह की अन्य रचनाएं भी स्वागत योग्य हैं. रचनाकार हार्दिक बधाई

++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः भाव तरंग

रचनाकारः हरिराम शर्मा 'जागिड़'

सम्पर्कः जूनी बागर, खीचियो का नोहरा, पीपली की गली, जोधपुर, राजस्थान

मूल्यः ४०/- रुपये मात्र

दो भागों में बंटी इस पुस्तक के पद्य खंड में ५१ रचनाएं व गद्य खंड में कुल १३ रचनाए समाहित है. लेखक ने बड़े ही सहज भाव से समाज में व्याप्त मिथ्याडम्बर, भ्रष्टाचार, रूढ़ियों, कुप्रथाओं एवं अनर्गल परम्पराओं का सरल, सरस एवं बोधगम्य भाषा में व्यक्त किया है. लेखक ने राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक पहलुओं पर भी अपनी कलम चलायी है. जीवन उपवन, फूल मुरझा गया, कवि का भटकाव, मां की अन्तर्वेदना आदि रचनाएं काफी अच्छी लगी. संग्रह की शेष रचनाएं भी पठनीय है और कुछ न कुछ समाज को संदेश देती प्रतीत होती है.

++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामःअंग जनपद के वैवाहिक विध-विधान

रचनाकारः डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'

सम्पर्कः सम्पादक, अंग माधुरी, बोरिंग रोड, पश्चिम, ५६, गांधीनगर, पटना-०१

मूल्यः ५०/- रुपये मात्र

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे एक संस्कृति पर लिखा गया है. यह एक स्वागत योग्य व सराहनीय कदम है. हमारी लोकसंस्कृतियां धीरे-धीरे समाप्त हो रही हे. उन पर काम होना ही चाहिए. प्रस्तुत पुस्तक में वर खोजने (वरतूहारी) से लेकर कोहवर तक के विधि विधानों का विस्तृत विवरण लेखक ने किया है. साथ ही साथ विवाह के विभिन्न अवसरो पर गाये जाने वाले गीतों का भी संग्रह किया है. इस पुस्तक को पढ़कर अंग जनपद की वैवाहिक परम्परा से भली भांति अवगत हुआ जा सकता हैं. डॉ० चकोर की रचनाएं मुझे व्यक्तिगत रूप से अक्सर इस पत्रिका और अन्य सहयोगी पत्र-पत्रिकाओं में मिलती रहती है. आपकी कई पुस्तकों का भी मैंने अध्ययन किया हैं. बड़े ही सरल शब्दों में अपनी बात को लिखते है. लोकसंस्कृति पर लिखी इस नई पुस्तक के लिए मेरी तरफ से चकोर जी को कोटिशः धन्यवाद.

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः सॉझ का सूरज

रचनाकारः डॉ० तारा सिंह

सम्पर्कः १५०२, १५ वॉ तल, सी, क्वीन हैरिटेज, पामबीच रोड, प्लॉट-६, सेक्टर-१८, सानपाड़ा, नवी मुम्बई-४००७०५

मूल्यः ६०/- रुपये मात्र

समीक्षकः कृष्ण मित्र, १०२, राकेश मार्ग, गाजियाबाद

सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री डॉ० तारा सिंह की यह अट्ठाहरवी कृति सांझ का सूरज में अपने को जग का बूढ़ा पथिक कहकर कवियित्री वृद्धावस्था की विवशता और शिथिलता का सजीव वर्णन कर रही है. जीवन की संध्या वेला में सूरज के ढलते ताप की अनिवार्यता और पश्चिम दिशा की ओर अग्रसर उस दिनकर की दैनिक यात्रा की विवेचना है. स्वर्ण आकांक्षा में निशा के अंचल में बैठी कोई मनोदशा थकी हारी उदास होकर मेरे अन्तःकरण में आकर बैठ जाती है. यह भाव है, संग्रह की एक विशिष्ट कविता के. कवयित्री ने पूछा है, उस अनजान परदेसी से जो पता नहीं कब आकर, बैठ गया था. प्रेम को बार-बार पुकारने वाले प्रेमी को सम्बोधित कविता में पाप, पुण्य, शान्ति, समता, अर्जन वर्जन सभी भावों की अभिव्यक्ति है. विधवा शीर्षक से लिखी कविता में प्रश्न सूचक दृष्टि में जानना चाहती हे कि मन्दिर की दीपशिखा की भ्रान्ति टूटी तरु की छटी लता सी दीन, यह कौन देवी है. धूल, धुंध में अग्निबीज बोने के भावों में बारुदी उन्माद का भाव मुखरित हो रहा है. कवयित्री ने विरह की ज्वाला में जलने की प्रक्रिया का वर्णन अत्यन्त नये अन्दाज में किया है. इसके अलावा जिन कविताओं में कवयित्री के छायावादी भावों के दर्शन किये जा सकते हैं उनमें 'तीन काल मुझ में निहित, वह कौन है, प्राणाकांक्षा, मन तू हौले हौल डोल, हमविहग चिर क्षुद्र आदि उल्लेखनीय है. मॉ की पुण्यतिथि पर लिखित कविता भी स्मृतियों को संजोने का प्रयास है. गंगा वट, वृक्ष, वीर गाथा और विजया-दशमी जैसे कवितायें संग्रह को समृद्ध कर रही है.

डॉ० तारा सिंह का यह काव्य संकलन पठनीय तो है ही साहित्य के लिये भी एक उपलब्धि है.